ज्ञानामृत

वर्ष 48, अंक 10, अप्रैल 2013 (मासिक)
मूल्य 7.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 90 रुपये

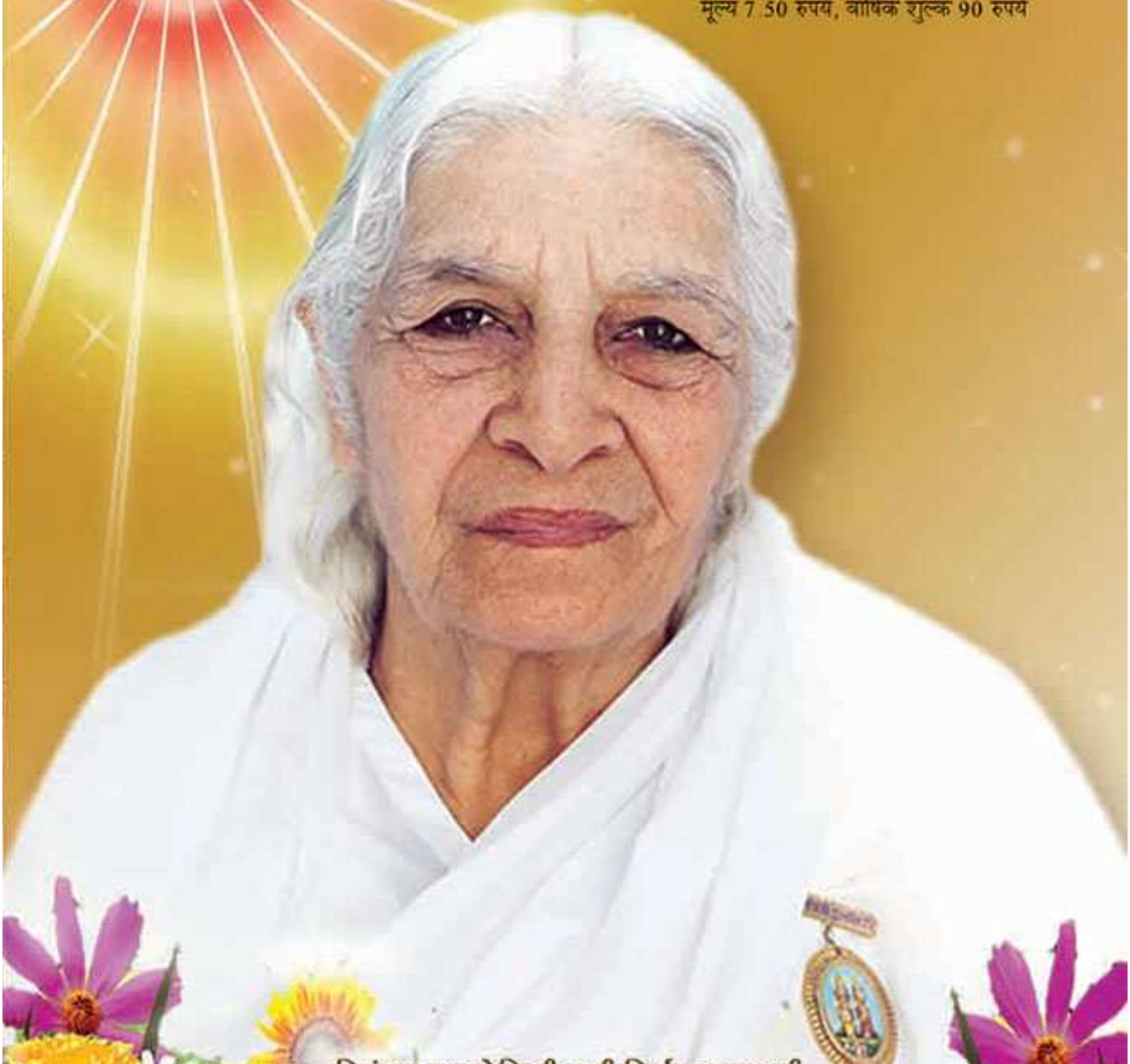

दिवंगत राजयोगिनी दादी निर्मलशान्ता जी
(1916-2013)

1.शान्तिवन- राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय भोपाल के उप-कुलपति भाता आशीष डोगरे, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई तथा अन्य मेमोरेन्डम ऑफ अन्डरस्टेंडिंग की स्वीकारोक्ति समारोह का उद्घाटन करते हुए। 2.नई दिल्ली- 'भारत का स्वर्णिम भविष्य' विषयक कार्यक्रम में शिवध्वजारोहण करते हुए न्यायाधीश जी.एस.सिंघवी, ट्रिनिडाड के स्वामी ब्रह्मदेव महाराज, यू.एन.सूचना केन्द्र की निदेशिका बहन किरण मेहरा, ब्र.कु. मोहिनी बहन तथा अन्य। 3.भुवनेश्वर- उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भाता मुरलीधर चंद्रकांत भंडारे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. लीना बहन। उड़ीसा के मुख्यमंत्री भाता नवीन पटनायक, उड़ीसा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भाता प्रदीप कुमार मोहन्ती तथा अन्य भी उपस्थित हैं। 4.पणजी (गोवा)- गोवा के राज्यपाल महामहिम भाता भरतवीर वान्चू, विधानसभा अध्यक्ष भाता राजेन्द्र आरलेकर, ब्र.कु. शोभा बहन तथा अन्य शिवरात्रि महोत्सव का उद्घाटन करते हुए। 5.औरंगाबाद- 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भाता मार्क फोरकार्ड, भाता निसार चुगा, भाता एन्थोनी फीलिप्स, ब्र.कु. जयन्ती बहन, ब्र.कु. संतोष बहन, महाराष्ट्र के उच्च तथा तकनीकी शिक्षा मंत्री भाता राजेश टोपे तथा ब्र.कु. मोरीन बहन। 6.गांधीनगर- गुजरात के मुख्यमंत्री भाता नरेन्द्र

एक महातपस्विनी का महाप्रयाण

परमपिता परमात्मा शिव, साकार प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना का कार्य जब प्रारंभ करते हैं तो उस सर्वोच्च रूहानी शमा पर संपूर्ण फिदा होने वाले आदि रत्नों में से एक दैदीप्यमान रत्न थीं राजयोगिनी दादी निर्मलशांता जी। आप दादा लेखराज जी की दैहिक पुत्री थी। आपका जन्म 24 अक्टूबर, 1916 में हैदराबाद (सिंध) में हुआ। लौकिक में चार बहनों और दो भाइयों में आपका स्थान तीसरा था। जन्म-पत्री का नाम पार्वती था लेकिन बाबा आपको प्यार से पालू नाम से पुकारते थे। जब बाबा ने यज्ञ की स्थापना की तो आपको नया अलौकिक नाम मिला 'निर्मलशान्ता'। सचमुच आप नाम के अनुकूल ही निर्मलता और शान्ति की देवी थी। आप चेहरे और चलन से, आदि पिता की साकार प्रतिमूर्ति नजर आती थी। आपके इस मन को मोहने वाले साकार रूप को देखने पर ब्रह्मावत्सों के अंतर्चक्षु के सामने साकार बाबा ही आ विराजते थे।

अपनी शीतल दृष्टि से शीतलता तथा अपनत्व बरसाती हुई आप सबके तन-मन को पुलकित कर देती थी। साक्षीद्रष्टा स्थिति ने आपको सहज ही साक्षात्कारमूर्त बना दिया था। आपकी रूहानियत भरी झलक देखकर हरेक का मन-मयूर नर्तन तो करता ही था, साथ-साथ यह भाव भी

पैदा होता था कि जिसकी रचना इतनी सुंदर, वह रचयिता भी कितना गुण-भंडार है।

97 वर्षीय दादी निर्मलशान्ता जी अंतिम घड़ी तक प्रसन्नचित्त और हल्की रही। आपकी मौन अवस्था में भी आपका चेहरा यज्ञ के आदि से लेकर अब तक के इतिहास का दर्पण सरीखा प्रतीत होता रहा।

आप प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका तथा पूर्वी क्षेत्रों की मुख्य संचालिका थीं। आपने 15 मार्च, 2013 को ब्रह्ममुहूर्त में 2 बजकर 45 मिनट पर अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। देश-विदेश के हजारों भाई-बहनें आपको श्रद्धा सुमन अर्पित करने आते रहे। 16 मार्च को मधुबन के चारों धामों की तथा आबू की परिक्रमा कराते हुए सुबह 11.30 बजे अंतिम संस्कार किया गया। आपके त्याग, तपस्या, ईश्वरीय सेवा और ईश्वरीय पालना से अभिभूत और कृतज्ञ हम सभी ब्रह्मावत्स आपको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ❖

अमृत-सूची

- मनवशीकरण मंत्र - मनमनाभव *(सम्पादकीय)* 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 6
- विदेश में ईश्वरीय सेवा 8
- 'पत्र' संपादक के नाम 11
- परम शिक्षक का होमवर्क 12
- परिवर्तन *(कविता)* 13
- ब्रह्माकुमार स्टीव नारायण 14
- मूल्यों के साथ जीवन-यात्रा ...17
- सत्कर्मों से दूर करता है 18
- सच्ची मर्दानगी 19
- श्मशानी तंत्र से मुक्ति.....20
- धन के चौकीदार न बनें 21
- शुभ भावनाओं का सुप्रभाव ..22
- ज्ञान मिला, व्यसन छूटे.....24
- दृढ़ता दिलाती है सफलता....25
- छूट गई नींद की गोली 26
- विवाह या वाह-वाह.....27
- संकल्पों की उम्र बढ़ाएँ.....29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि 32
- बीती को भूलना एक मंत्र 33
- ज्ञान चंद्रमा की उज्ज्वल 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383
hindigyanamrit@gmail.com

सम्पादकीय ..✍

मनवशीकरण मन्त्र – मनमनाभव

मन बड़ा चंचल है, पर ध्यान दें तो इसकी चंचलता रुक सकती है। कई बार हम देखते हैं कि व्यक्ति सबके बीच बैठा, बातें सुन रहा है पर उसका पाँव हिल रहा है। उससे पूछो, पाँव हिलाने का क्या प्रयोजन है, तो एकदम सावधान, स्थिर होकर बैठ जाएगा। वास्तव में उसे पता ही नहीं था कि पाँव हिल रहा है। कई बार हाथ से भी इस प्रकार की अनजानी क्रिया हो जाती है। विचार कीजिए कि जब इतना बड़ा अंग भी अनजानी हरकत कर सकता है तो मन तो अति सूक्ष्म है। बिना ध्यान दिए सेकेण्ड में कहाँ से कहाँ पहुँच सकता है इसलिए इस सूक्ष्म मन की हर सूक्ष्म गति पर ध्यान देने की ज़रूरत है। मन की भटकन और दिशाहीनता को रोकने का साधन है मनमनाभव स्थिति।

विष के प्रभाव में कड़वा भी लगता है मीठा

भगवान कहते हैं, मन को मेरे में लगाओ। मन भगवान में तब लगे जब इस पाँच तत्वों से बने जगत से वैराग्य हो। जब किसी व्यक्ति को सर्प काटता है तो उसके शरीर में विष व्याप्त हो जाता है। इस विष के प्रभाव में उसे नीम की कड़वी पत्ती भी मीठी लगती है। इसी प्रकार काम, क्रोध से भरा यह विश्व भी मानो कड़वा नीम ही है। परन्तु विषय-वासना रूपी सर्प से काटे गए मनुष्य को, उस विष के प्रभाव के कारण यह संसार मीठा लगता है। जब शरीर में व्याप्त वासना-विष निकले तब संसार के कड़वेपन का अहसास हो और तभी पिता परमात्मा से मन जुड़ सके।

शरीर रूपी मकान की मालिक है आत्मा

मनमनाभव होने से पहले ज़रूरी है मन को यथार्थ समझना। मन आत्मा की एक शक्ति है और आत्मा वह चेतन शक्ति है जिसकी चेतना सारे शरीर में व्याप्त है। उसके शरीर में मौजूद रहने से शरीर का हर अवयव जीवित लगता है। उसके निकल जाने पर हर अवयव मृत हो जाता है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि शरीर रूपी मकान में आत्मा मालिक के रहने से इसके हर हिस्से की व्यवस्था ठीक से संचालित होती है।

आत्मा मस्तिष्क के माध्यम से कार्य करती है। सारे शरीर में ऐसी सूक्ष्म शिराओं का जाल बिछा है जो हर अंग को मस्तिष्क से जोड़ती हैं। इन शिराओं के द्वारा आत्मा और अंगों के बीच सूचनाओं का, अनुभवों का आदान-प्रदान होता है।

जब स्थानीय बेहोशीकरण (पूरे शरीर के बजाए किसी एक अंग का या एक हिस्से का) किया जाता है तब मस्तिष्क और आत्मा से उस अंग को जोड़ने वाली इन शिराओं को कुछ घड़ियों के लिए काट दिया जाता है या सुन्न कर दिया जाता है। फिर उस अंग की शल्यक्रिया की जाती है। शल्यक्रिया के दौरान हुई पीड़ा की सूचना आत्मा तक पहुँचती नहीं क्योंकि सूचना देने वाली शिराएँ बाधित हैं इसलिए दर्द महसूस नहीं होता। इन शिराओं के होश में आते ही या सचेत होते ही दर्द महसूस होने लगता है।

इसकी तुलना हम मकान में बिछे बिजली के तारों से कर सकते हैं। किसी भी मकान में बिजली के मुख्य शक्ति केन्द्र से बिजली की भिन्न-भिन्न प्रकार की तारें हर कमरे में पसारी जाती हैं जिनके आधार पर हर कमरे में रोशनी रहती है। मान लीजिए, किसी कमरे में बल्ब जल नहीं रहा, ट्यूब में या अन्य उपकरण में खराबी आई तो उस कमरे में फैली तारों का, मुख्य केन्द्र से सम्बन्ध काट दिया जाता है। फिर बिजली के उपकरणों की मरम्मत की जाती है। उपकरण के ठीक हो जाने पर काटे गए सम्बन्ध को पुन: जोड़ दिया जाता है। इसी प्रकार, शरीर के अंगों के आप्रेशन के समय बेहोशीकरण द्वारा थोड़ी देर के लिए मस्तिष्क और

आत्मा से अंग का कनेक्शन काट दिया जाता है। आप्रेशन के बाद सम्बन्ध पुन: जोड़ दिया जाता है। इससे स्पष्ट है कि जड़ तत्वों से बने शरीर की हर क्रिया के संचालन का आधार चेतन आत्मा ही है।

आत्मस्वरूप में टिकने से मन की स्थिरता

आत्मा के स्व-स्वरूप में टिकते ही मन भी स्थिर हो जाता है। जैसे ही हम संकल्प करते हैं, मैं शुद्ध, चेतन, साक्षीद्रष्टा, अलिप्त आत्मा हूँ, हम भृकुटी सिंहासन पर विराजमान हो कर्मेन्द्रियों की बागडोर सम्भाल लेते हैं। जैसे हवाई जहाज़ में उड़ते व्यक्ति को सीट से बंधे होने पर भी धरती से न्यारा होने का बोध होता है इसी प्रकार भृकुटी में बैठे भी, कर्मेन्द्रियों की राजा होते भी आत्मा को सबसे न्यारा, हल्का और निर्बन्धन होने का आनंददाई अहसास होता रहता है।

राजयोग द्वारा पुराने संस्कारों की समाप्ति

इसी अहसास को लेकर यह तत्वों से पार निजधाम की यात्रा करती है। आत्मा का धाम ही पिता परमात्मा का धाम है जिसे ही परमधाम, शान्तिधाम कहा जाता है। भौतिक जगत में है धाम और इस जगत से परे है परमधाम अर्थात् परमपिता का धाम। वहाँ अखण्ड शान्ति है। उसी शान्ति में आत्मा का पिता परमात्मा से मिलन होता है और परमात्मा पिता की सर्वशक्तियों रूपी किरणें आत्मा में भरती जाती हैं। परमधाम में ज्योति बिन्दु परमपिता परमात्मा से ज्योतिबिन्दु आत्मा का मिलन, राजयोग की सर्वोच्च स्थिति है। इस स्थिति में पिता परमात्मा की शक्तिशाली किरणों के आगोश में आत्मा उसी तरह समा जाती है जैसे बच्चा माँ की गोद में समा जाता है। इस समाने के अनुभव से उसके सब पुराने स्वभाव, संस्कार गल-मिट जाते हैं। जिस प्रकार चुम्बक के समीप रखी कैसेट में भरा मैटर मिट जाता है उसी प्रकार परम शक्तिशाली चेतन चुम्बक परमात्मा के सान्निध्य में आत्मा रूपी चेतन कैसेट में भरे विकारी संस्कार भी मिट जाते हैं। यही है ज्वालामुखी योग स्थिति। इसी के द्वारा पुराने-निकृष्ट संस्कार भस्म हो जाते हैं।

राजयोग द्वारा विश्वकल्याणी स्वरूप

जब हम कपड़े की धुलाई करते हैं तो साबुन से केवल उसका मैल धुलता है। उस पर बने रंग-बिरंगे फूल बने ही रहते हैं क्योंकि ये फूल कपड़े की मूल बनावट में हैं। इसी प्रकार आत्मा के आदि-अनादि संस्कार तो उसमें सदा ही बने रहते हैं परन्तु मध्यकाल में जो विकारी संस्कारों रूपी मैल उस पर चढ़ी वह परमात्म संग से उतर जाती है। मैल उतरते ही आत्मा बेदाग़ हीरा बन, मूल गुणों की सुगन्ध बिखेरने लगती है। जैसे लोहे का रंग काला और तासीर शीतल होती है, उसी प्रकार कलियुग में आत्मायें भी काली और शक्तिहीन हो चुकी हैं। जैसे लोहे को अग्नि में डालने से उसमें चमकदार लालिमा आ जाती है, उसी प्रकार आत्मा को भी ज्ञान सूर्य भगवान की समीपता मिलने से उसमें प्रकाश, शक्ति और हल्कापन भर जाता है। जैसे लाल-लाल गर्म लोहा बिना बाहरी हस्तक्षेप के स्वत: गर्मी के प्रकंपन फैलाने लगता है, उसी प्रकार ज्ञान सूर्य के सानिध्य से ऊर्जावान बनी आत्मा भी स्वत: अपने भीतर भरे शान्ति, प्रेम, शक्ति के प्रकंपन फैलाने लगती है। यही है राजयोग द्वारा विश्व कल्याणी बनने की प्रक्रिया।

अजपाजाप

हम इसे यूँ भी कह सकते हैं कि परमात्मा पिता की याद एक सुहावनी अग्नि है। जितना-जितना याद का अभ्यास करते जाते हैं उतना-उतना यह सुहावनी अग्नि बढ़ती जाती है। इस अग्नि से आत्मा में पड़ी खाद जल जाती है और वह सच्चा कुन्दन बन जाती है। उसे ऐसा सुख मिलता है जिसका वर्णन नहीं हो सकता। इस अग्नि को प्रज्वलित किए रखने के लिए ज्ञान रूपी घृत, मन रूपी बाती और लग्न रूपी अग्नि चाहिए। ऐसी हार्दिक याद ही अजपाजाप अथवा मन्मनाभव स्थिति है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

प्रश्नः- बहुत विचार चलते हों तो कैसे रोकें?

उत्तरः- जो भाई-बहनें बहुत सोचते हैं उन्हें देख तरस पड़ता है, सोचने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि कल्याणकारी बाप है, समय भी कल्याणकारी है और कल्याणकारी यह संगठन है। ऐसे कल्याणकारी समय में सब बातों में कल्याण है, यह पक्का निश्चय हो। कुछ भी हो जाये पर निश्चय का बल सहयोग देता है। और बातों में नहीं जायेंगे, बातों में जाना समय गंवाना है। जितना पुरुषार्थ की गहराई में जाओ, दूसरे संकल्पों से फ्री हो जाओ तो शरीर कैसा भी है, अच्छा है। यह नहीं कहेंगे, ऐसा है, कैसे अच्छा है? समय पर साथ देता है, इसलिए अच्छा है।

प्रश्नः- धोखा न लें, न दें – इसके लिए क्या करें?

उत्तरः- परीक्षायें भी आयेंगी परन्तु लक्ष्यदाता द्वारा लक्ष्य मिला है लक्ष्मी नारायण सम बनने का। बनाने वाला बाबा बैठा है, संगम का समय है, यह भी याद आता है तो बहुत खुशी रहेगी। ऐसी-ऐसी अच्छी बातें दिल में हैं तो कभी धोखे में नहीं आयेंगे, न धोखा देंगे। अच्छी और ऊंची बातें अगर बुद्धि में नहीं हैं तो धोखा मिल जाता है। तो न धोखे में आना है, न धोखा देना है। दुनिया में दुःख, अशान्ति बहुत है क्योंकि या तो धोखे में आये हैं या धोखा दिया है। इसमें जिसने अपने को सम्भाला है, भगवान मेरा साथी है.. तो सदा ही भगवान ने अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया है, कभी धोखे में नहीं आये हैं। उसी घड़ी टच होगा कि यह ठीक नहीं है। बस, जो न करने वाली बात है रुक जायेंगे, जो करने वाली बात होगी वह कर लेंगे। यह भी अनुभव है, जो आवश्यक बात है वो छूटेगी नहीं, जो आवश्यक बात नहीं है उससे बच जायेंगे। हम इन्सान हैं, हमारे पास ठीक और गलत को समझने की बुद्धि है कि यह सच है, यह झूठ है, यह पाप है, यह पुण्य है। इन्सान हो करके अगर इतना भी समझ से काम नहीं लेता है तो वो कौन हुआ? गॉड का बच्चा ऐसे चले, जो उसकी चलन से भगवान याद आये। मीठे-मीठे बाबा के बोल ऐसे हैं जो हमको एकदम पिघला देते हैं।

प्रश्नः- दादी जी, क्या आपका कैसे करेंगे, क्या करेंगे, इस प्रकार का चिन्तन नहीं चलता?

उत्तरः- शान्त रहना हमारा काम है, सेवा कराना बाबा का काम है इसलिए कैसे करेंगे, क्या करेंगे, ये संकल्प नहीं आते हैं। चारों विषयों में पूरे नम्बर लेने के लिए ज्ञान है। ज्ञान से योग है, योग का प्रैक्टिकल सबूत है धारणा अच्छी होगी, उससे सेवायें हुई हैं इसलिए जब, जहाँ जो सेवा होनी है वह होगी। क्या सेवायें करूँ, यह ख्याल कभी नहीं आया है। मेरी भावना है कि जो बात मैंने बाबा से सीखी है या बाबा ने मुझे दी है वो सब आपको खुली बता दूँ, करो न करो आपकी मर्जी, पर मैं कहती हूँ, आप करेंगे। मैंने ऐसा शक न अपने में रखा है, न आप में रखती हूँ। भावना है यह। आज्ञाकारी बच्चों को ही दुआयें

मिलती हैं। दुआओं में दवाई समाई हुई है। कैसी भी कड़ी बीमारियाँ हैं, सब खत्म हो जाती हैं और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति आ जाती है, दोनों काम इकट्ठे होते हैं। जब कोई भी अन्दर व्यर्थ ख्याल आवे तो फौरन उसको खत्म करो, तो शान्त रह सकेंगे। शान्ति में रहना माना सदा के लिए व्यर्थ खत्म।

प्रश्नः- कभी-कभी निराशा क्यों आती, अपमान महसूस क्यों होता?

उत्तरः- बाबा ने हम बच्चों को शुद्ध, श्रेष्ठ, दृढ़ संकल्प की चाबी दे दी है, तुम अपना काम करते चलो। आध्यात्मिकता के सम्बन्ध से आपस में प्यार है। कभी तनाव नहीं है, सदा क्षमा, रहम, सच्चाई, स्नेह भगवान ने भर दिया है। बाबा ने दिनप्रतिदिन सेवा की जो प्रेरणा दी हैं, सब साकार हो रही हैं, होंगी, यह हमारी भावना है। याद और सेवा के बिना मन क्या करता है, पूछो। यह तन बाबा की अमानत है, अमानत को सम्भाल रहे हैं, अमानत को कभी अपना नहीं समझा जाता है। बाबा ने देह के भान से परे रहने के लिए इतने अच्छे मन्त्र सिखाये हैं। हम छोटे बच्चे हैं तो बाबा-बाबा करते हैं, बाबा कहते, बच्चे-बच्चे। बाबा ने मुस्कराना सिखा दिया, कोई भी बात है, ड्रामा कल्याणकारी है। हर आत्मा का पार्ट अच्छा है। बाबा ने कहा है, संस्कारों का संस्कार करो, यह भी बाबा को क्यों कहना पड़े। मन, बुद्धि, संस्कार का ज्ञान बाबा ने दिया है। बाबा ने इतना स्पष्ट ज्ञान दिया है, जिससे दिल ने, मन ने कितना प्यार से ज्ञान को स्वीकार किया है इसलिए बुद्धि कहीं नहीं जाती है। थोड़ा अभिमान है, तो अपमान की फीलिंग आती है। निराशा आती है तो भी अभिमान है। मेरे मीठे बाबा ने कहा है, जहाँ तक जीना वहाँ तक सीखना है। बाप सर्वशक्तिवान है, उसने इतनी शक्ति दी है जो हर शक्ति आर्डर में रहती है। बाबा के महावाक्य हमारे जीवन में हैं, वही जीना सिखाते हैं। मरूं तो ऐसे, जीऊं तो ऐसे। जैसे सतयुग में शरीर छोड़ना, धारण करना बड़ी बात नहीं है, उसका अभ्यास यहाँ से करना है। यहाँ नेचुरल अभ्यास हो जाए। कोई कर्मभोग का हिसाब-किताब न हो। बाबा ने ऐसा हमारा जीवन बनाया है जिसमें हम सदा सन्तुष्ट रहते हैं। कभी कोई आवेश में नहीं आता, किसी को ईर्ष्या नहीं होती। दुनिया में कोई ईर्ष्या से छूटा हुआ नहीं है। स्पर्धा और भ्रष्टाचार के बिना चलता नहीं है संसार में। बाबा ने इससे मुक्त कर दिया। भाग्यशाली तो क्या पदमापदम भाग्यशाली हैं जो बाबा को कदम कदम में फालो करके पदमों की कमाई कर रहे हैं। हमारे पास और कुछ नहीं है। सच्चाई है, स्नेह है, श्रेष्ठ संग है, समझ भी है। अंधविश्वास से कोई नहीं बैठा है। कोई सदस्य या फालोअर बनकर नहीं बैठा है, हर एक सेवाधारी है। बाबा ने भी कहा, मैं सेवाधारी हूँ। संगठन में ईश्वरीय स्नेह की शक्ति से अन्दर की कोई भी समस्या हल हो जाती है। संगठन में मिलकर रहने की भावना नहीं है तो व्यक्ति भारी हो जाता है। जो भारी होता है वह सेकण्ड में हल्का हो जाए यदि संगठन के प्यार में समा जाए। प्यार में सब बातें सहज हो जाती हैं।

प्रश्नः- ड्रामा का ज्ञान सुख का आधार है, कैसे?

उत्तरः- आत्मा का ज्ञान शान्ति देता है, बाबा का ज्ञान शक्ति देता है। सुख कौन देता है? कैसी भी बात आ जाये, दुख नहीं करेंगे, दुख का मेरे पास निशान न रहे, तो मैं कहेंगी, ड्रामा की नॉलेज बहुत सुख देती है। बाबा, ड्रामा का ज्ञान देकर, सारी योजना बताकर कहता है, बच्चे, सदा श्रीमत पर चलते चलो, कुछ भी हो जाये, संशय न आ जाये। श्रीमत पर चलने वाले अंदर से पक्के होते हैं। किसी भी हालत में परमत के प्रभाव में नहीं आना। किस के प्रति भी मन में ग्लानि नहीं रखना। निश्चय के बल से, समर्पित बुद्धि से, साक्षीद्रष्टा बनकर हर पार्टधारी के पार्ट को देखते हर्षित रहो। यह क्यों हुआ, क्या हुआ..अरे वैरायटी ड्रामा है। ऐसा नहीं होना चाहिए..इसमें शान्ति से काम लो माना योगबल से काम लो। मूंझो और मुरझाओ नहीं।

❖

विदेश में ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ - 5

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

पिछले लेख में मैंने लिखा था कि सन् 1971 में शिवबाबा ने हमें एक सेवाकेन्द्र पूरब में और एक सेवाकेन्द्र पश्चिम में खोलने के लिए कहा था। लंदन में ईश्वरीय सेवाकेन्द्र की स्थापना हुई, उसके लिए निर्मला बहन गई। बाकी हम पाँच डेलीगेट्स हांगकांग गये। लंदन, हांगकांग दोनों स्थानों पर बाबा के ज्ञान के संपर्क में आये पुराने बहन-भाई थे इस कारण वहाँ ईश्वरीय सेवाकेन्द्र की स्थापना करना बहुत सहज हो सका। हांगकांग में भ्राता श्याम तथा उनकी युगल हीरू बहन का मकान आसानी से किराये पर मिल गया क्योंकि वे हांगकांग से अमेरिका जाने वाले थे। दादा राम और सावित्री बहन ने भी हांगकांग में ईश्वरीय सेवा में काफी सहयोग दिया। जब ये लोग भारत में लखनऊ में थे तब आदरणीया गुलजार दादी ने इन्हें ईश्वरीय ज्ञान दिया और ये लखनऊ से ही प्यारे साकार बाबा को मिलने आबू आये। इनकी एक खूबी अभी भी मुझे याद है कि लखनऊ से आबू आते समय जहाँ-जहाँ उनकी ट्रेन रुकती थी, वहाँ-वहाँ दादा राम मधुबन बाबा को टेलीग्राम करते थे कि बाबा हम आपसे मिलने आ रहे हैं। बाबा भी समझ गये कि यह बाबा का अनन्य, सिकिलधा, लाडला बच्चा है, बहुत समय से बिछड़ा बच्चा बाबा से मिलने आ रहा है। कुछ समय लखनऊ रहने के बाद ये दोनों आबू में आ गये। उनके बच्चे हांगकांग में थे। ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद आबू का म्यूजियम बना जिसके संचालन के लिए दादी जी ने उन्हें नियुक्त किया था। उन्होंने इस ज़िम्मेवारी को बहुत अच्छी रीति संभाला, बाद में तबीयत के कारण वे आबू से हांगकांग आ गये। हांगकांग में उनके बच्चों गोविन्द भाई, लच्छू भाई आदि तथा अन्य सिंधी परिवारों के साथ हमारा अच्छा संपर्क हो गया। सबके मन में फिर से बाबा के प्रति श्रद्धा निर्मित हुई। जगदीश भाई ने भी अच्छी मेहनत की। अच्छे-अच्छे स्थानों पर प्रदर्शनी का कार्यक्रम उन्होंने आयोजित कराया।

हांगकांग से मैं जब सिंगापुर गया तो मेरे रहने का प्रबंध हरदेवी बहन की बेटी मीरा ने किया। इन हरदेवी बहन को यज्ञ में भंडारण कहते थे क्योंकि यज्ञ में हरदेवी नाम से कई बहनें थीं। सिंगापुर में दादी प्रकाशमणि सन् 1954 में पहली बार आई थीं, तब से कांति भाई के गुजराती परिवार से उनका संपर्क था। वे माउंट आबू भी आये थे और बाबा के ज्ञान के बहुत नज़दीक थे। कांति भाई के संपर्क से सिंगापुर यूनिवर्सिटी में मेरा भाषण रखा गया। भाषण का विषय था - सतयुगी दैवी राज्य कारोबार (Deity Governance) अर्थात् सतयुग-त्रेतायुग की राज्य व्यवस्था। कई बार मैंने सोचा था कि इस विषय पर अपने ईश्वरीय परिवार में अनुसंधान किया जाये और सतयुग-त्रेतायुग की राज्य व्यवस्था को खोलकर दुनिया के सामने रखा जाये। अब तक तो हम दैवी दुनिया के बारे में यही कहते रहे कि वहाँ सोलह कला संपूर्ण, सर्वगुणसंपन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म देवी-देवता होंगे, शेर और गाय भी एक घाट पर पानी पीयेंगे परंतु सतयुगी दुनिया का कारोबार कैसे होगा, वह दुनिया के सामने स्पष्ट नहीं लिखा था। साकार बाबा ने सतयुगी दुनिया के लिए तीन शब्द प्रयोग किये थे – अटल, अखंड और निर्विघ्न। इन शब्दों की लिखत पर एक पर्चा बनाकर उन्होंने सब सेन्टर्स को भेजा था तब मैं सोचता था कि बाबा ने तो ऐसा लिखा है परंतु यह राज्य कारोबार 2500 वर्ष तक कैसे चलेगा, इसके सुचारु संचालन का व्यवहारिक ज्ञान या अनुभव कैसे सबको होगा। जब तक यह सिद्ध करके नहीं दिया है, तब तक स्वर्ग एक मान्यता या कल्पना ही है, ऐसे ही लोग मानते रहेंगे।

दैवी दुनिया में धर्मों के बारे में

बाबा ने बताया है कि वहाँ एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा होगी। विश्व के धर्मों का इतिहास भी अद्भुत तरीके से कल्पवृक्ष के ज्ञान द्वारा दिया है कि कैसे परमात्मा द्वारा प्रस्थापित आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही तने के रूप में सतयुग-त्रेतायुग में रहेगा और बाद में इसी तने से निकली हुई डालियों के द्वारा अन्य धर्म, पंथ आदि निकलते हैं। ठीक इसी रीति से राज्यव्यवस्था भी सतयुग में सर्वश्रेष्ठ होगी, बाद में इसी राज्यव्यवस्था के अंतर्गत अनेक प्रकार की राज्यव्यवस्थाओं का कारोबार होगा जिसे लोग समाजवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद आदि-आदि नामों से जानते हैं। जैसे विभिन्न धर्म द्वापर युग से शुरू हुए, ऐसे ही द्वापर युग से राज्यकारोबार में भी विभिन्न वाद शुरू हुए। इसी वाद के विवाद के कारण ही समाज में अनेक समस्यायें खड़ी हुईं।

इसलिए सिंगापुर यूनिवर्सिटी में अपने वक्तव्य में पहले मैंने बताया कि चार्ल्स डार्विन का उत्क्रांतिवाद (Theory of Human Revolution) सही नहीं है बल्कि पहले सतयुग में दैवी रामराज्य था जिसकी स्थापना अब परमात्मा करते हैं। वहाँ के जीवन के बारे में भी बताया कि कैसे सतयुग के 1250 वर्षों में 8 जन्म होते हैं अर्थात् वहाँ लंबी आयुष्य होती है और बाद में त्रेतायुग में भी करीब 12 जन्म होते हैं। धन-धान्य से संपन्न उस समय इस विशाल सृष्टि रूपी रंगमंच पर थोड़े ही लोग थे और इसी कारण उनमें आपस में वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष आदि नहीं थे। राज्य कारोबार में भी अद्वैतवाद था अर्थात् द्वैत न होने के कारण द्वंद्व भी नहीं था। इस राज्य कारोबार के अंदर पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद आदि सब थे। सब प्रकार के राज्य कारोबार का मिश्रित श्रेष्ठ राज्य कारोबार था।

सतयुगी दैवी दुनिया के राज्य कारोबार का बीज अभी परमात्मा डाल रहे हैं। इस राज्य व्यवस्था की स्थापना में मुख्य बात है कि तानाशाही (Dictatorship) सतोप्रधान स्वरूप में होगी। दुनिया में तानाशाही में राज्य कारोबार करने वाले तमोप्रधान होने के कारण उनके चरित्र तथा कार्यविधि से लोग दुखी रहते हैं। दुनिया को हिटलर, स्टालिन जैसे शासकों की निरंकुश तानाशाही याद आती है। तानाशाही का सतोप्रधान स्वरूप है परमात्मा की श्रीमत। परमात्मा ही हमें सत्कर्म के पथ पर ले जाते हैं और हमें पवित्रता को धारण करने का महामंत्र बताते हैं तथा विकारों पर विजय प्राप्त करने की श्रीमत देते हैं। परमात्मा का साम्यवाद हमें अपनी संपत्ति को परमात्मा को समर्पण करना सिखाता। साम्यवाद में सरकार संपत्ति की मालिक होती है किंतु परमात्मा के साम्यवाद में परमात्मा हमारी संपत्ति हमें वापस देते हैं और कहते हैं कि ट्रस्टी बन संपत्ति को ईश्वरीय सेवा में लगाओ और उसके द्वारा अपना भाग्य बनाओ। साम्यवाद में धन-संपत्ति का राष्ट्रीयकरण हो जाता है जिससे धन-संपत्ति का कोई सदुपयोग नहीं होता जबकि परमात्मा के साम्यवाद में हमारी धन-संपत्ति हमें वापस मिल जाती है और ट्रस्टी भाव के कारण उसका शुद्धिकरण हो जाता है।

इस प्रकार साम्यवाद में सिर्फ Nationalisation होता है जबकि ईश्वरीय साम्यवाद में इसी संपत्ति का Divinisation होता है। फलस्वरूप हम अनेक सत्कर्म करके अपने धन को सफल कर सतयुगी दैवी दुनिया में श्रेष्ठ पद पा सकते हैं। इस प्रकार से संपत्ति का दैवीकरण (Divinisation) परमात्मा ही कर और करा सकते हैं, यह सतयुगी राज्य व्यवस्था की जड़ है।

समाजवाद में सबको आगे बढ़ने की समानता होती है परंतु बुद्धि का स्तर सबका एक समान न होने के कारण समाजवाद के अंदर भी धन-संपत्ति के कारण वर्ग भेद हो जाता है। परमात्मा के समाजवाद में भी हरेक अपनी बुद्धि तथा संस्कारों के आधार पर आगे बढ़ने का यथार्थ पुरुषार्थ करता है और इसी के आधार पर सतयुग में भी राजाई, राजपरिवार, साहूकार तथा प्रजा आदि बनते हैं

परंतु इन सबके अंदर द्वेष भाव नहीं होता। कारण कि संगमयुग में किये पुरुषार्थ के आधार पर ही वे सतयुग में विभिन्न पदों के अधिकारी बनते हैं इसलिए उनमें किसी प्रकार का भेद निर्माण नहीं होता। सतयुगी राजव्यवस्था में पूंजीवाद भी होता है जिसे राजाशाही कहते हैं परंतु वह राजाशाही श्रेष्ठ होती है क्योंकि उसके लिए तीन मापदंड हैं – स्वपसंद, प्रभुपसंद और लोकपसंद।

यहाँ मैं एक बात लिखना चाहता हूँ कि एक आस्ट्रेलियन बहन ने मुझसे कहा कि मुझे सतयुग में राजा-रानी का राजकारोबार पसंद नहीं क्योंकि राजा, रानी सबको दुख देते हैं तब मैंने उनसे पूछा कि अगर ब्रह्मा बाबा और मातेश्वरी या दादी-दीदी या जानकी दादी-गुलजार दादी सतयुग में विश्व महाराजा और विश्व महारानी बनें तो आपको पसंद हैं? उन्होंने कहा कि यह तो बहुत अच्छा है। मैं ऐसी राज्य परंपरा अवश्य पसंद करूँगी। मैंने कहा कि वही तो हो रहा है, फिर आपको प्रश्न क्यों उठते हैं?

इसी संबंध में एक बात लिखना चाहता हूँ कि दुनिया में लोग मानते हैं कि समाजवाद विदेशों की उपज है परंतु मैं मानता हूँ कि यह भारत की देन है। उसका मिसाल है माउंट आबू स्थित देलवाड़ा का मंदिर परिसर। यहाँ वस्तुपाल, तेजपाल, विमलशाह जो गुजरात के सेनापति, महामंत्री आदि थे, उनके संगमरमर के मंदिर हैं तो साथ ही इसी परिसर में उन कारीगरों के भी मंदिर हैं जो मंदिर निर्माण में मिले धन को घर नहीं ले गये बल्कि इसी परिसर में अपने मंदिर बनवाये। इस प्रकार एक ही परिसर में शासको, धनवानों के तथा कारीगरों के मंदिर हैं। यह बात सिद्ध करती है कि भगवान के सामने कोई बड़ा-छोटा नहीं, धनवान-निर्धन नहीं, यह है ईश्वरीय समाजवाद जो सतयुग में 2500 वर्ष तक रहा।

धन-संपत्ति के बारे में परमात्मा ने एक नया दृष्टिकोण हमारे सामने रखा। अब तक तो दुनिया में धन, पत्नी, परिवार आदि को माया समझते आये और इन्हें आध्यात्मिक मार्ग में बाधा मानते आये। परमात्मा आदर्श गृहस्थ व्यवहार प्रस्थापित करते हैं और धन, पत्नी, परिवार को आध्यात्मिक मार्ग में बाधा नहीं मानते परंतु समाज के अंदर श्रेष्ठ जीवन व्यवहार के लिए इन्हें साधन समझते हैं। अगर कोई चीज़ विघ्न रूप है तो वह लोभ रूपी विकार है जिसके फलस्वरूप धन दुख का कारण बनता है क्योंकि उससे ही समाज में धनवान, गरीब का भेद बनता है। परमात्मा हमें पूंजीवाद के बारे में नया दृष्टिकोण देकर श्रेष्ठ पूंजीवाद की स्थापना करते हैं।

मैंने इस लेख में तो संक्षिप्त में लिखा परंतु सिंगापुर यूनिवर्सिटी में मैंने इस पर दो घंटे से अधिक समय भाषण किया क्योंकि सभी राजनीति शास्त्र के विद्यार्थी थे। मेरे प्रवचन के बाद राजनीति शास्त्र के विभागाध्यक्ष ने मुझे कहा कि हम सब साम्यवाद, समाजवाद, तानाशाही, राजाशाही इन सबको जानते थे परंतु इन सबका समन्वय दैवी रामराज्य है, इस बात की जानकारी आज पहली बार हुई।

जब मैं भारत आया तो मैंने इस विषय पर ज्ञानामृत में लेख भी लिखे थे जो पुराने भाई-बहनों को मालूम होगा। बाद में शील दादी, रोजी बहन और ऊषा जी भी सिंगापुर गये और वहाँ शील दादी के भाई मिठू भाई के घर में दो-तीन हफ्ता रहे। जगदीश भाई थाइलैंड आदि अन्य देशों में बाबा का संदेश देने के लिए गये। मैं चार मास विदेश रहा। शील दादी, रोजी बहन, ऊषा जी करीब 8 मास विदेश में रहे। भ्राता जगदीश जी, जहाँ तक मुझे याद है, शायद 14-15 मास से अधिक समय विदेश में रहे। डॉ. निर्मला बहन दो साल से अधिक समय लंदन में रहे, फिर अफ्रीका का चक्कर लगाकर भारत वापस आये।

इस लेख के साथ सन् 1971 की विदेश सेवा का संस्मरण समाप्त हुआ। अगले लेख में सन् 1974 में अफ्रीका में कैसे ईश्वरीय सेवा हुई तथा दादी जानकी को अव्यक्त बापदादा ने कैसे लंदन सेवा पर भेजा, इसके बारे में विस्तार से लिखूँगा।

❖

'पत्र' संपादक के नाम

नवम्बर, 2012 के अंक में 'समय की पहचान' लेख अत्यन्त प्रभावशाली लगा। समय का सदुपयोग करने वाला इन्सान प्रत्येक लक्ष्य को पा लेता है और समय का दुरुपयोग जीवन में दुख और अशान्ति ला देता है। समय निरन्तर चलता रहता है, कभी रुकता नहीं। समय से किया गया हर काम सफलता की पहचान है। सम्पादकीय भी प्रशंसनीय है, भौतिकता की दौड़ में इन्सान अपनी शान्ति को खो रहे हैं। कहानी 'असाधारण चरित्र' दिल को छू गयी। ज्ञानामृत वह अमृत है जिसे पीकर अमरत्व को पाया जा सकता है।

– ब्र.कु. सरोज, बैरिया (बलिया)

सितंबर, अक्टूबर एवं नवंबर 2012 का गीता सार पढ़ा। इसमें लेखक ने गीता एवं महाभारत की सच्चाई बताई। यह गीतासार शंकाओं से मुक्त बनाने वाला है।

– ब्र.कु. चंदन,
बम्हनी, राजनांदगांव (छ.ग.)

फरवरी, 2013 का सम्पादकीय लेख 'काम के गटर में तड़पता समाज' जिसने भी पढ़ा होगा, वह ज़रूर एक बार विचार करेगा कि इस लेख में सौ प्रतिशत सच्चाई है। इस लेख की मैं जितनी भी सराहना करूँ, कम है। यह बिल्कुल सत्य है कि आज देश में न जानवरों का भय, न आक्रमण का भय, हम भयमुक्त हैं फिर भी हमारी मातायें एवं बहनें असुरक्षित हैं। हम मनुष्यों को शर्म करनी चाहिए, शर्म ही नहीं बहनों की सुरक्षा में आगे बढ़कर कार्य करना चाहिए। ज्ञानामृत की इतनी मधुर और सरल भाषा होती है, मुझे लगता है कि मैं वास्तविक अमृत पी रहा हूँ।

– शिवमंगल सिंह,
केन्द्रीय कारागार, फतेहगढ़

फरवरी, 2013 की ज्ञानामृत के 'प्रेम एक महान गुण' लेख में लेखक ने तीखी-पैनी कलम से जो लिखा, वह पूरा का पूरा सराहनीय है। इसमें प्रेम शब्द की विवेचना कर मानव को उपयुक्त ठिकाने पर बांधने का उत्तम प्रयास किया गया है। लेखक को बारंबार बधाई!

– अतर सिंह,
गाँव सूरजपुर, जिला अलीगढ़

दिसंबर, 2013 के अंक में 'सुख दो, सुख लो' संपादकीय लेख में पढ़ा कि दुख देने से दुख ही मिलता है। जीवन में घटी दुख की घटनाओं का चिंतन करने से हम दुख को पीसते हैं। वह बाहर निकलेगा ही। इसलिये किसी को दुख देना नहीं है, दुख लेना नहीं है। यह मंत्र पक्का करना है। संजय की कलम से 'योग मार्ग में विघ्न और निवारण' भी पढ़कर बहुत खुशी हुई। आत्मा रूपी दीपक को ईश्वरीय याद में जगता रखने के लिए ज्ञान रूपी घृत डालते रहना चाहिए।

– एम.बी.मकवाणा, अमरेली

दिसंबर अंक में प्रकाशित संपादकीय लेख 'सुख दो, सुख लो' बहुत अच्छा लगा। लेख में अकारण दुखी रहने से मुक्ति व दुखों को सुखों में बदलने की युक्ति का मार्ग बहुत पसंद आया। ज्ञानामृत का प्रत्येक अंक अनमोल है, यह नई सतयुगी सृष्टि का मार्ग प्रशस्त कर रही है।

– ब्र.कु.रवि नोसादर, जयपुर

ज्ञान रूपी अमृत से सरोबार ज्ञानामृत पत्रिका 'यथा नाम तथा गुण' अमूल्य ज्ञानकोष है। सामयिक लेख शिवरात्रि, संपादकीय 'काम के गटर में तड़पता समाज'..आदि प्रत्येक पठनीय, चिंतनीय व मननीय है। पत्रिका संग्रहणीय है। यह सचित्र पत्रिका मुखपृष्ठ से अंत तक श्रेष्ठ कलेवर को संजोये हुए और प्रेम व समर्पण के अमृत से पूरित है इसलिए शब्दातीत श्लाघ्य है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय संसार में आत्मीय सेवा अनवरत रूप से कर रहा है।

– गोविन्दराम सोनगरा, जोधपुर

परम शिक्षक का होमवर्क

● ब्रह्माकुमारी शकुंतला, डिगावा मण्डी (हरियाणा)

जैसे किसी राष्ट्र का प्रमुख किसी विशेष खुशी के अवसर पर या फिर उस देश पर कोई विपत्ति आई हो तो ऐसे आपातकालीन समय पर अपने देशवासियों के नाम सन्देश प्रसारित करता है, उसी प्रकार अभूतपूर्व चारित्रिक महासंकट से गुजर रहे समस्त विश्व-वासियों प्रति समस्त विश्व के प्रमुख, सर्वात्माओं के परमपिता, परमशिक्षक, परमसद्गुरु ने सफेद किले (ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय) की विशाल स्टेज से अपना सन्देश प्रसारित किया जिसे पीस ऑफ माइन्ड टी.वी. चैनल पर करोड़ों लोगों ने देखा व सुना, लाखों ने समझा। यदि आप उस सन्देश को सुनने से वंचित रह गये हों तो उसके सार पर एक नज़र डालते हैं–

अमृतवेले मिलेगा सहज वरदान

जैसे राष्ट्र प्रमुख अपनी प्रजा के कल्याण के लिए नई योजना की घोषणा करते हैं, परमपिता परमात्मा शिव ने भी समस्त विश्व के अपने बच्चों के लिए योजना बनायी है कि **जो भी बच्चे स्व कल्याण और विश्व कल्याण के लिए दृढ़ संकल्प करेंगे इसके लिए उन्हें विशेष अमृतवेले परमात्मा की तरफ से सहज पुरुषार्थ का वरदान सौगात में मिलेगा** अर्थात् प्रत्येक 24 घण्टे में कम से कम एक घण्टा प्रतिदिन विश्व प्रमुख परमात्मा शिव से रूबरू होकर गुण व शक्तियाँ लेने का प्लेटिनम चान्स!! इसमें विश्व की कोई, कहीं भी रहने वाली मानव आत्मा अपने-अपने स्थान पर रहते हुए अमृतवेले के विशेष समय पर अपने बुद्धियोग बल से स्व कल्याण व विश्व कल्याण हेतु जो भी ज्ञान, गुण, शक्तियाँ, मार्ग प्रदर्शना लेना चाहे, वरदान में मिलेंगी, मेहनत से नहीं। कौन होगा जो इस सुनहरे अवसर को एक दिन भी गंवायेगा!!

बनना है समस्या प्रूफ

प्रभु पिता ने समस्त विश्व की आत्माओं को यह भी इशारा दिया है कि इस वर्ष हर एक के सामने असन्तुष्ट बनाने वाली भिन्न-भिन्न तरह की परिस्थितियाँ आयेंगी। इसमें विशेष ध्यान रहे कि हर हालत में हमें सन्तुष्ट रहना है क्योंकि जो सन्तुष्ट होगा वही प्रसन्नचित्त रह सकता है। सन्तुष्टता की शक्ति परिस्थितियों व समस्याओं पर विजय प्राप्त करा सकती है, भले ही आजमा कर देखो। मनुष्यों ने संसार में वाटर प्रूफ, फायर प्रूफ, बुलैट प्रूफ, भूकम्प प्रूफ साधन तो निर्मित किये लेकिन अब शिव पिता परमात्मा ने आह्वान किया है कि आप बच्चों को स्वयं को ही समस्या प्रूफ बना लेना है ताकि कोई भी विघ्न के वार का प्रभाव न पड़े। समस्या प्रूफ बने

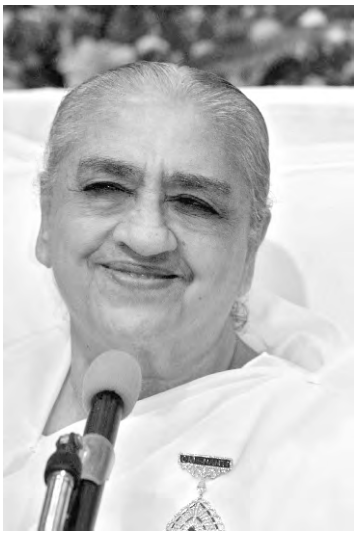

तो समाधान स्वरूप स्वत: ही बन जायेंगे। कोई भी समस्या आने पर, यह क्यों आई? कैसे आई? किसके द्वारा आई? अब मेरा क्या होगा? आदि न सोच कर उसका समाधान सोचना है, नहीं तो उस समस्या के समाधान का मिला हुआ सीमित समय सोच में ही चला जाता है और समस्या ज्यों की त्यों रह जाती है।

मूलभूत पाँच आवश्यकताएँ

प्राचीन काल से ही भारत की संस्कृति में 'दातापन' का भाव भरा हुआ है। **आध्यात्मिकता भी यही सिखाती है कि जो हम अपने लिए चाहते हैं पहले वह हमें दूसरों को देना है। किसान गेहूँ चाहता है तो वह पहले गेहूँ के दानों को मिट्टी में मिलाता है। व्यापारी पैसा चाहता है तो वह पैसा व्यापार में लगाता है। बैंक से पैसा**

निकलवाने का इच्छुक व्यक्ति पहले बैंक में जमा करता है। आइये! हम सभी अवलोकन करें अपनी आवश्यकताओं को कि हमें क्या चाहिए? चाहनाओं की सूची तो बहुत लम्बी है, अन्तहीन है फिर भी समस्त आवश्यकताओं को हम मुख्य पाँच आवश्यकताओं में समा सकते हैं जिनकी प्राप्ति से सब कुछ प्राप्त हो सकता है, वे हैं – 1.स्नेह 2.सहयोग 3.सम्मान. 4.सुख 5.शुभ भावनाएँ

उठाएँ कुछ क्रियात्मक कदम

कौन होंगे जिन्हें इनकी आवश्यकता न होगी। तो फिर हम आज से ही, नहीं-नही अभी से ही दूसरों को उदार दिल से, फ्राख दिल से बांटने का संकल्प कर लें क्योंकि ये न मांगने से, न खरीदने से, न उधार मिल सकती हैं, न ही इन्हें प्रयोगशाला में बनाया जा सकता है बल्कि ये तो जितना हम खुले दिल से दूसरों को बाटेंगे उतना ही हमारे पास लौट कर आयेंगी। इसमें विशेष ध्यान देने की बात यह है कि ये पाँचों आवश्यकताएँ यदि दूसरों से लाख चाह कर भी, अथक पुरुषार्थ करके भी नहीं मिल रही हैं तो अवश्य ही हमारे पास इनका जमा का खाता खत्म है और साथ ही साथ यह भी सूक्ष्म इशारा है कि शीघ्रातिशीघ्र अधिक से अधिक दूसरों को स्नेह, सहयोग, सम्मान, सुख व शुभ भावनाएँ देकर अपना खाली स्टॉक भरपूर करें ताकि संगमयुग की बाकी बची हुई चन्द घड़ियों का अतीन्द्रिय सुख व आनन्द ले सकें। जीवन खुशियों से भरा रहे उसके लिए यथार्थ के धरातल से कुछ क्रियात्मक कदम उठाएँ। ध्यान रहे! इस निर्मल प्रवाह को हमारी बदले की भावनाएँ, दूषित भावनाएँ, दु:खदायी आदतें कूड़ा-कचरा बन कर अवरुद्ध न कर दें।

किन-किन बातों में चाहिए सन्तुष्टि

(1) स्वयं से सन्तुष्ट - अर्थात् स्वयं के पार्ट से सन्तुष्ट।

(2) शरीर से सन्तुष्ट - चाहे काला है, गोरा है, लम्बा है, छोटा है, बूढ़ा है, बच्चा है, रोगी है या निरोगी है।

(3) स्थान से सन्तुष्ट - देश या विदेश, गाँव या शहर, गली या बाजार, घर या सेन्टर, बड़ा या छोटा, सरकारी या निजी।

(4) सम्बन्धियों से सन्तुष्ट - सुखदायी या दु:खदायी, सहयोगी या विरोधी, ज्ञानी या अज्ञानी।

(5) सम्पत्ति से सन्तुष्ट - गरीब या अमीर, कार या साईकिल, झोंपड़ी या महल।

एक होती है मजबूरी की सन्तुष्टता लेकिन भगवान ने हमें ज्ञानयुक्त, समझयुक्त सन्तुष्टता अपनाने का पाठ पढ़ाया है। जीवन में वास्तविक खुशी व प्रसन्नता इसी से आती है।

जानी जाननहार शिव पिता ने यह भी इशारा दिया है कि वर्तमान समय जहाँ कहीं भी विघ्न है वहाँ विशेष सहनशक्ति की आवश्यकता है। सहनशक्ति की कमी विघ्नों को जन्म देती है। इसलिए सहनशक्ति का प्रयोग करके जल्दी से जल्दी स्वयं को व अपने संगठन को 'निर्विघ्न' बनाने का परिणाम परमात्मा को देना है। हमारे निर्विघ्न बनने का वायब्रेशन वायुमण्डल में फैलेगा तो अन्य आत्माओं को भी निर्विघ्न बनने में आसानी होगी। ❖

परिवर्तन

ब्र.कु. वेदप्रकाश तोमर, खतौली

एक वो ताज था जिसे पहनकर
आती थी सदा ही लाज।
एक यह ताज है
जिसको पहनकर
बन गया हूँ मैं सरताज।
एक वो सफर था,
घना जंगल था,
जिसमें फँसकर
टूट गयी थी मेरी आस।
एक यह सफर है
जिस पर चलकर
पल-पल बढ़ता मेरा विश्वास।
मरिचिका से भ्रमित था मैं,
अब सागर है मेरे पास।
पहले खुशियाँ ढूँढ़ता रहता
पल-पल होता था उदास।
अब अखुट खुशी मिली है मुझको
पल-पल बुझती मेरी प्यास,
क्योंकि मेरा बाबा है मेरे पास।

ब्रह्माकुमार स्टीव नारायण भाई के साथ एक भेंट

गयाना गणराज्य के पूर्व उपराष्ट्रपति और गयाना की ओर से भारत में नियुक्त (सेवानिवृत्त) उच्चायुक्त

भेंटकर्त्ताः ब्रह्माकुमार रंजीत फुलिया

प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से निराकार शिव परमात्मा को पहचानने वाले और उनके द्वारा प्राप्त दिव्य ज्ञान को जीवन में धारण करने वाले सर्वप्रथम राजनयिक व्यक्ति हैं ब्र.कु. भ्राता स्टीव नारायण जी। राजयोग के अभ्यास द्वारा वृत्ति के सकारात्मक परिवर्तन से किस तरह पारिवारिक और राजनैतिक जीवन में स्व परिवर्तन और विश्व परिवर्तन का कार्य हुआ है, इसके बारे में आपने व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव हमारे साथ बांटे हैं। हम आशा करते हैं कि इन अनुभवों से सुधी पाठक, जीवन में नया उमंग–उत्साह और आध्यात्मिकता की राह में विशेष मदद का अनुभव करेंगे – सम्पादक

प्रश्नः- कृपया बताइये, आप ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में किस तरह से आये?

उत्तरः- एक बार जब जयन्ती बहन गयाना में हमारे एक मित्र के निमन्त्रण पर उनके यहाँ पहुंची तब मैं ब्रह्माकुमारीज के सम्पर्क में आया। उन्होंने राजयोग के अभ्यास के बारे में हमारे साथ बहुत ही खुले हृदय से चर्चा की। फिर जयन्ती बहन हमारे घर में 3 दिसम्बर, 1975 को सुबह चार बजे पहुंची। हमें उनका आतिथ्य स्वीकार करने का और पूरे प्रवास में उनके साथ रहने का विशेष सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिस सत्य को वो हमारे साथ प्रभावशाली तरीके से बांट रही थी उसका असर हमारे पूरे परिवार पर पड़ा। थोड़े ही समय में हम 'श्रीमत' (राजयोग के अभ्यास की तकनीक के साथ जुड़ी हुई धारणायें) का पालन करने लगे। हमारी जीवन पद्धति और घर के तौर-तरीकों में उसके बाद परिवर्तन आ गया।

चार महीने बाद जयन्ती बहन के साथ सूरत की (दिवंगत) लता बहन तथा मोहिनी बहन (न्यूयार्क) आकर शामिल हो गईं। अप्रैल, 1976 में इन सभी ने मिलकर जार्ज टाउन में एक सेन्टर खोला। मोहिनी बहन को मुख्य कोआर्डिनेटर नियुक्त किया गया, वे सन् 1987 तक वहाँ रही। जयन्ती बहन लण्डन वापस लौट गई। हेमलता बहन (ट्रिनीडाड) और मीरा बहन (मलेशिया) मोहिनी बहन के साथ रहीं। ये सभी वहाँ की सेवाओं के निमित्त बन गईं। दो साल में ही ब्रह्माकुमारीज़ का आवाज़ गयाना के तीनों ही प्रान्तों, डेमेरारा, बेरबिक और एसक्रीबो में फैल गया। इस नाम का सामान्य नागरिक से सरकार के अधिकारियों तक हरेक को पता चल गया।

प्रश्नः- क्या आप जयन्ती बहन के सम्पर्क में आने से पहले ब्रह्माकुमारीज़ को जानते थे?

उत्तरः- इससे पहले मैंने ब्रह्माकुमारी संस्थान के बारे में कभी सुना तक भी नहीं था। मैं हिन्दू पृष्ठभूमि से हूँ और हिन्दुत्व के सिद्धान्तों को मानता रहा हूँ परन्तु अन्य धर्मों को जानने की भी मेरी रुचि रहती थी। मैं अनेक धार्मिक संगठनों के सम्पर्क में आया करता था। जब जयन्ती बहन ने राजयोग के ज्ञान को मेरे साथ बांटा, मुझे वह अलग और अद्भुत लगा। मुझे यह अहसास हो गया कि यह परमश्रेष्ठ और वैश्विक बात है जिसमें सभी धर्मों और लोगों को सम्मिलित किया गया है।

प्रश्नः- जब आप पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू में आये तो कैसा लगा?

उत्तरः- सन् 1976 की बरसात में हम पहली बार अपने परिवार के साथ माउण्ट आबू आये। हम आधी रात को मधुबन पहुंचे। जैसे ही हम मधुबन के आंगन में पहुंचे, सूक्ष्म आध्यात्मिक प्यार और अपनेपन के वातावरण ने हमारा

स्वागत कर हमें गले लगाया। दादी प्रकाशमणि और दीदी मनमोहिनी जी ने अपनी सुन्दर मुस्कराहट और शक्तिशाली दृष्टि से हमारा स्वागत किया। हम पर गुलाबाशी और गुलाब के पत्ते छिड़के गये। हमें एकदम अपने घर में पहुंचने का अहसास हुआ। हमें महसूस हुआ कि हम पवित्रता, आध्यात्मिकता और रूहानियत के स्थान पर पहुंचे हैं।

प्रश्नः- मधुबन में आपको किन चीज़ों ने आकर्षित किया और आप वहाँ कितने दिन ठहरे?

उत्तरः- पहली मधुबन यात्रा पर मैं मधुबन में तीन दिन रुका। चार महीने बाद दिसम्बर, 1976 में मैं दुबारा मधुबन आया, चार दिन रहा और एक बार बाबा से भी मिला। सन् 1977 से मैं हर साल मधुबन आने लगा। हालांकि गयाना से भारत तक यात्रा बहुत लम्बी है फिर भी मुझे यह बात स्पष्ट थी कि मुझे इन यात्राओं पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है और मधुबन के इस पवित्र और आध्यात्मिक वातावरण का अधिक से अधिक लाभ लेना, मेरी आध्यात्मिक जीवन की इमारत का मज़बूत आधार है।

सन् 1983 में मुझे भारत में गयाना के उच्चायुक्त के रूप में नियुक्त किया गया और मैं 1990 तक परिवार सहित नई दिल्ली में रहा। इस समय के दौरान हम साल में एक बार मधुबन आने तक सीमित नहीं रहे बल्कि साल में तीन-चार बार मधुबन आते थे। तीन-चार बार आना भी हमारे लिए काफी नहीं था। हम अधिक से अधिक बार मधुबन आना चाहते थे जिसका कारण था बाबा के साथ हमारी प्यार भरी मुलाकात और रूहानी परिवार का साथ। हम ईश्वरीय परिवार को बढ़ते हुए देखकर आश्चर्यचकित हुआ करते थे। भारत के हरेक स्थान से और विदेशों से भाई-बहनें यहाँ पहुंचने लगे थे। महसूस होता था कि हमारा यह परिवार कई गुणा बढ़ रहा है और हमें यह प्यार, बाबा और परिवार से ऐसे ही मिलता रहेगा।

हमारे यहाँ आने का मुख्य आकर्षण था प्यार। इस प्यार को शब्दों में वर्णन करना मुश्किल है। जब बाबा मुरली पूरी करके दादियों और भाई-बहनों से पर्सनल मुलाकात करते तब आपसी प्यार और अपनेपन की उन यादों को मैं कभी भी भूल नहीं सकता हूँ। इन मुलाकातों के दौरान मुझे वरिष्ठ दादियों और बाबा के करीब रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब बाबा के जाने का समय होता था तब बाबा हममें से हरेक को बहुत लम्बी और प्यार भरी दृष्टि देते थे। जब वो मेरी तरफ देखते थे तब मुझे महसूस होता था जैसे मेरे अपने पिता इस साकार दुनिया से छुट्टी ले रहे हैं और पता नहीं मुझे फिर मिलेंगे या नहीं। ये जो विदाई की घड़ियाँ होती थीं वो आत्मा में बहुत प्यार का अहसास भरकर जाती थीं। इसी प्यार, अपनेपन और समीपता के अनुभव से मेरी पालना होती रही। मैं बाबा के साथ, साथी का अनुभव करता रहा और यही बात मुझे बार-बार यहाँ खींच कर लाती रही। निश्चित रूप से यह प्यार के प्लेन में बैठकर उड़ने का अहसास था।

प्रश्नः- आप इस ज्ञान को धारण करने वाले पहले राजनीतिज्ञ हैं, आपको इस बात का गर्व महसूस होता होगा!

उत्तरः- मैंने इस बात को कभी इस तरह से नहीं सोचा लेकिन इतिहास में यह बात नूंध हो गई कि मैं ही वह पहला व्यक्ति हूँ जो बाबा के ज्ञान में आया और पूरी तरह से ब्रह्माकुमार बना जिसे सरकार के मन्त्रीमण्डल में विशेष स्थान प्राप्त था। अभी तो वो एक इतिहास है लेकिन मैं यह बता सकता हूँ कि इस बात से मुझ पर कोई भी फरक नहीं पड़ा और ना ही अब पड़ रहा है। गर्व की बात तो यह है कि मुझे ज्ञान सुनने को मिला। यह जैसे कि अन्तरात्मा की सत्यता को जागृत करना है। जिस (ज्ञान) को पहले से जानता था लेकिन भूल गया था उसे फिर से याद करने जैसा है। इसके कारण मैं जीवन के सही लक्ष्य और अर्थ में वापस आ सका।

प्रश्नः- ईश्वरीय ज्ञान की कौन-सी ऐसी बातें हैं जिनसे

आप बहुत अधिक प्रभावित हुए?

उत्तर:- पहली बात जिसने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया वो है कि **हम सभी आत्मायें हैं, आपस में भाई-भाई हैं और एक बाप की सन्तान हैं इसलिए हमें आपस में एक-दो को भाई-भाई की दृष्टि से देखना है। इस सत्यता से मेरे आध्यात्मिक जीवन और राजनैतिक कार्यों पर गहरा प्रभाव पड़ा। मैं लोगों को बदली हुई नज़रों से देखने लगा। अब गयाना में मुझे अलग-अलग जातियाँ नहीं दिखाई देती, मैं उन्हें रंग, भाषा या धार्मिक परिवेश के आधार से नहीं तोलता। यह होना एक तरह की स्वतन्त्रता की भावना है जिसका जीवन में बहुत महत्व है।**

आगे चलकर इसी बात ने मेरे कार्य को बहुत अधिक प्रभावित किया। बाबा का ज्ञान हमें कहता है कि नम्र बनो, सहनशील बनो, उदार बनो और सबको एक नज़र से देखो। ये सब मेरे जीवन की महत्वपूर्ण बातें बन गईं। ज्ञान की समझ मिलने के तुरन्त बाद मेरा पूरा परिवार शाकाहारी बन गया और यह बहुत ही सहजता से हुआ। हालांकि कैबिनेट के अन्य मन्त्रियों के साथ रहते हुए यह बात चुनौतीपूर्ण थी। हम लोग कई मीटिंग्स में एक साथ होते थे जिसमें पूरा दिन बीत जाता और अन्त में भोजन भी एक साथ करना पड़ता था। ऐसे समय पर मैं केवल शाकाहारी भोजन की मांग करता था। मेरे सहकर्मी यह कहकर मज़ाक करते थे कि कितना समय तक तुम यह करते रहोगे। वो लोग शायद यह सोचते थे कि मैं जल्दी ही उकता कर इसे छोड़ दूंगा। हालांकि उनमें से कई लोग मेरे शाकाहारी भोजन का भी स्वाद लेते थे। इस भोजन का उन पर कुछ असर भी हुआ। यही कारण है कि कैबिनेट के हर मन्त्री, प्रधानमन्त्री, गयाना के राष्ट्रपति और हरेक विशेष व्यक्ति ने व्यक्तिगत स्तर पर बाबा की सेवा में सहयोग दिया। वे या तो बाबा के घर में किसी कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में आते या फिर गयाना में आने वाली दादियों या वरिष्ठ भाई-बहनों से मुलाकात करने का सौभाग्य उन्हें मिलता। गयाना में जब कोई बड़े भाई-बहनें आते थे तो नज़दीकी छोटे-छोटे देश जैसे सूरीनाम, ट्रिनीडाड और बरबडोस के लोगों को भी इसका लाभ मिलता था। यह एक बहुत ही अच्छा अनुभव था कि हम लोग ज्ञान की बातों को ऊँचे ते ऊंचे स्तर के लोगों तक तथा नीचे से नीचे के स्तर के लोगों तक पहुंचा रहे थे। मेरे लिए बहुत सन्तुष्टता की बात थी कि बाबा का सन्देश सारे विश्व को मिलना आरम्भ हो चुका है। लोगों के द्वारा इस सन्देश को स्वीकार करते हुए देखना भी मेरे लिए बहुत अधिक हर्ष और मनोरंजन की बात थी। वे लोग जैसे कि चात्रक होकर ज्ञान लेते थे, ज्ञान की बूंद-बूंद को धारण करते थे।

प्रश्न:- आपकी पत्नी बेट्टी बहन ज्ञानमार्ग में सन् 1975 से चल रही हैं, उनका क्या रोल रहा और उन्होंने आपकी प्रगति में किस प्रकार से सहयोग किया?

उत्तर:- उन्होंने मेरे से कई गुना अधिक पुरुषार्थ किया हुआ है। मुझे तो कोई न कोई काम रहता ही था लेकिन गृहिणी होने के नाते उनको बाबा की सेवा के लिए काफी समय मिलता था। चाहे गयाना हो या भारत, उन्होंने ब्र.कु. बहनों के साथ बहुत अच्छा समय बिताया। उनके साथ वो हमेशा चर्चा करती रहती थी कि ज्ञान के गहरे अर्थ क्या हैं और उनको धारणा में कैसे लाया जाये। उनकी बहनों के साथ की बातें, घर में हमारे बीच बातों का आधार बनीं। बहनों के साथ से जो कुछ भी नया वो सीखती थी, मेरे साथ शेयर करती थी। वो बहनों के साथ ट्रिनीडाड, बरबडोस और सूरीनाम आदि स्थानों पर भी जाती थी क्योंकि उनको सेवा का बहुत शौक है। एक मंत्री की पत्नी होने के नाते कुछ पदासीन लोगों को मिलना उनके लिए आसान हो जाता था। चाहे गयाना हो, टोरन्टो हो या नई दिल्ली, उसने हर जगह बाबा का सेवाकेन्द्र बनाने में मदद की। वो हमेशा बहनों और बड़ों के सम्पर्क में रहा करती थी, आज भी रहती है। उसी ने हमारे पूरे परिवार को बाबा की तरफ आगे बढ़ने में उत्साहित किया। एक पर्सनल मुलाकात में बाबा ने उन्हें कहा, तुम वही हो जिसे मैं चाहता था क्योंकि तुम्हें बहुत ऊंचा पार्ट बजाना है।

इस दैवी परिवार में हमेशा से उसने एक विशेष पार्ट बजाया है। निश्चित रूप से वह हमारे बच्चों को, नाती-पोतियों को, परपोतों को बाबा के ज्ञान की तरफ उत्साहित करती रहती है। मेरे दो बेटे शादीशुदा हैं लेकिन उनको हमेशा बाबा और बड़ों के लिए प्यार रहा है। शादी से पहले वो मधुबन में आते थे और दादी प्रकाशमणि के साथ बहुत समीपता महसूस करते थे। मेरे बच्चे और बच्चों के बच्चे सभी दैवी परिवार के बहुत नजदीक हैं और सहयोगी भी हैं। मेरी सबसे बड़ी बेटी सवि की शादी हमारे ज्ञान में आने के पहले हुई। अब वो टोरन्टो में रहती है और बाबा की सेवा में बहुत सक्रिय है। दूसरी बेटी गायत्री तो पूरी तरह से समर्पित है और न्यूयॉर्क में मोहिनी बहन के साथ रहती है। युनाइटेड नेशन में बाबा के कार्य में वो मददगार बनी है। मेरी तीसरी बेटी सीता, मैनहटन की पेस यूनिवर्सिटी में कम्यूनिकेशन सिस्टम की स्कॉलरशिप पर जब गई तभी न्यूयॉर्क में नया सेन्टर खुला। मोहिनी बहन के साथ उन्होंने न्यूयॉर्क में एक छोटे से घर, ऑस्टोरिया क्विन्स में बाबा की सेवाओं की शुरूआत की। दादी जानकी ने भी अपने कदम उस जगह पर रखे। उस छोटे से रूम से न्यूयॉर्क की सेवायें अब 300 एकड़ की जमीन पर पीस विलेज, लर्निंग एण्ड रिट्रीट सेन्टर के रूप में सामने आई, जहाँ पर निरन्तर उन्नति हो रही है।

हम लोग बहुत खुश हैं क्योंकि हमारे पूरे परिवार ने यह रास्ता चुना है। हमें 6 नाती और 6 पोते-पोतियां और दो पड़पोते हैं और उन सभी को शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा का ज्ञान है। वो ज्ञान को जानते हैं और ब्रह्माकुमारी परिवार से, दादियों और बड़े भाई-बहनों से उनका विशेष प्यार है। बापदादा, दादियाँ और बड़े उनके इस प्यार से अवगत हैं और बदले में उनको बहुत प्यार भी देते हैं। मेरे लिए तो यह बहुत बड़ा वरदान है। और यह सब सम्भव हुआ है आण्टी बेट्टी (ईश्वरीय परिवार में इसी नाम से प्रसिद्ध हैं) के अनवरत प्रोत्साहित करने से। **(क्रमशः)**

विनम्र श्रद्धांजलि

कुंज दादी, दादी प्रकाशमणि की बड़ी बहन सती दादी की बेटी थी। आप

बहुत प्रभावशाली प्रवचन करने वाली और निर्मान होकर रूहानी पालना देकर भाई-बहनों में विशेष बल भरती थीं। आपकी पालना में साकार बाबा की पालना की भासना आती थी। भ्राता जगदीश जी को प्रारंभिक ज्ञान का कोर्स देने के निमित्त आप ही बनी। और भी कई महारथी भाई-बहनों को ईश्वरीय ज्ञान और ईश्वरीय पालना देने में आपका विशेष योगदान रहा। आप बड़ी निश्चयबुद्धि, निर्भय और यज्ञ प्रति सच्ची और वफादार थीं।

आप सन् 1937 में 9 वर्ष की आयु में बाबा के पास आ गईं। पहली बार जब बाबा के सामने गईं तो बाबा की दृष्टि पड़ते ही ध्यान में चली गईं। बाबा के तन में अवतरित शिव बाबा को पहचानकर आप उनकी हो गईं। तब से लेकर कराची में 14 वर्ष के संगठन की भट्ठी के बाद मम्मा-बाबा के साथ माउंट आबू में आईं। फिर दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हापुड़ और विदेश में भी सेवायें करते हुए अंतिम समय में पटना में सेवारत थीं। कुछ समय से चल रहे शरीर के हिसाब-किताब को भी सेवा का साधन समझकर आप सदा हर्षित और निश्चिन्त रहीं। दो मार्च, 2013 को सेवा का पार्ट पूरा कर बापदादा की गोद में समा गईं। साकार बाबा के हाथों पली ऐसी योग्य रूहानी शिक्षिका को समस्त दैवी परिवार हार्दिक विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है। ❖

सत्कर्मों से दूर करता है आलस्य

● ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

एक बड़े शहर में एक महिला के पति ने गेहूँ खरीदे और ख़राब न हों इसलिए कीटनाशक गोलियाँ गेहूँ की टंकी में डाल दी। एक दिन उस महिला ने टंकी से निकालकर गेहूँ साफ किये और अच्छी तरह धोकर सूखने डाल दिये। गेहूँ का कचरा घर के बाहर एक जगह इकट्ठा डाल दिया जिसमें गेहूँ के पतले व कटे दाने भी शामिल थे तथा कीटनाशक गोलियाँ भी शामिल थी।

कुछ ही देर बाद कई गायें वहाँ से गुजरी और उन्होंने उस कचरे के बीच जो गेहूँ के दाने थे, उन्हें खाना शुरू कर दिया। महिला तो कचरा डालकर बेफिक्र हो गई थी। लेकिन सुबह के समय कचरे के पास एकत्रित मोहल्ले के लोगों का शोर-शराबा सुनकर वह भी घर से बाहर आई और नजदीक जाकर देखा तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गई। सात गायों के पेट फूल गये थे और वे सब की सब मर चुकी थी।

वह महिला किससे क्या कहे, पर उसे अपराध बोध ज़रूर हो रहा था कि मेरी एक छोटी-सी गलती के कारण सात मूक गायों की जान चली गई। अगर मैंने कचरा पेटी के अंदर डाल दिया होता तो ये गायें नहीं मरती। कितना बड़ा पाप मैंने कर दिया। वह चुपचाप अपने कमरे में गई और जी भर कर रोई और अपनी अंतर्वेदना किसी से नहीं कह सकी परंतु उसका मन कभी-कभी यह कह उठता कि मैं चीख-चीख कर कह दूँ कि अब कोई भी मेरे जैसा आलस्य, असावधानी भरा ऐसा कार्य नहीं करना जिससे मूक प्राणियों की जान जाये। वह कई दिनों तक विचलित रही पर गौ-हत्या के सदमे से उबर नहीं पाई और सदा के लिए चल बसी।

कहानी का सार यही है कि कर्म अच्छे तो करो लेकिन आलस्य को अपने पास फटकने नहीं दो। आलस्य के कारण बड़े से बड़ा हादसा हो सकता है जो प्राण तक ले लेता है। जो दूसरों को देखकर सीख लेते हैं, असल में वही ज्ञानी हैं। कोई भी कार्य करने से पहले जरूर सोचें कि इसका आगे प्रभाव क्या पड़ सकता है।

शिवभगवानुवाच – आलस्य भी एक विशेष विकार है। जो पुरुषार्थी पुरुषार्थ के मार्ग पर चल पड़े हैं, उनके सामने माया का वार इस आलस्य के भिन्न-भिन्न रूपों से आता है। आलस्य की निशानी है, **अच्छा सोचेंगे, कर ही लेंगे, हो ही जायेगा, कल से करेंगे, फलाना करे तो हम भी करेंगे, यह कार्य पूरा करके फिर करेंगे आदि-आदि।** चलते-चलते पुरुषार्थ में रुकावट आना वा पुरुषार्थ साधारण रफ्तार में होना भी आलस्य है।

कोई ऐसे अनुभव करते हैं, विघ्न भी नहीं है, ठीक भी चल रहे हैं लेकिन उत्साह वा विशेष कोई उमंग या लगन नहीं है तो यह भी आलस्य की निशानी है। आलस्य धीरे-धीरे पहले साधारण पुरुषार्थी बनायेगा वा समीपता से दूर करेगा फिर दूर करते-करते धोखा भी दे देगा अर्थात् कमज़ोर बना देगा। जब निर्बल बन जायेंगे तो कमी-कमज़ोरियों की प्रवेशता शुरू हो जायेगी और एक दिन बिल्कुल ही सब तरह से वंचित बन जायेंगे। जैसे आजकल के ज़माने में कोई किसका खून करता है या कोई भ्रष्टाचार का कार्य करता है तो पहले उसको दूर भगाकर ले जायेगा। उसे अकेला, कमजोर, असहाय बनाकर फिर उस पर वार करेगा। इसी प्रकार माया भी पहले सर्वशक्तिमान परमपिता शिव परमात्मा से बुद्धि को दूर करती है फिर कमज़ोर बनी आत्मा पर वार करती है। इसलिए अपने अंदर बाप के गुण गाने हैं, उनकी महिमा करनी है। महान कार्य करो, चिल्लाओ नहीं। उत्साह में रहो। यह उत्साह ही आलस्य को, कमजोरी को, निर्बलता को खत्म करता है। जैसे किसी को कमाई करने का उत्साह होता है फिर

आलस्य समाप्त हो जाता है। जो करना है, जितना करना है, अभी करना है। कभी भी आलस्य का रूप अपने पास आने नहीं देना है। हम विश्व परिवर्तन के निमित्त हैं, निमित्त सदैव उत्साह व उमंग में रहते हैं, उन्हें देख और भी उत्साह-उमंग में आ जाते हैं।

❖

सच्ची मर्दानगी

● **अवनीश कुमार मिश्रा, दुबई**

पैदल अथवा साधनों के द्वारा यात्रा के दौरान बदहाल एवं लावारिस दीवारों पर सफेद चूने या फिर किसी रंग से लिखे हुए मोटे-मोटे अक्षरों में 'नामर्द रोगी मिलें हकीम....से, नाकाम मर्द मिलें डॉक्टर फलां से अथवा निराश पुरुष मिलें अमुक-अमुक से आदि-आदि वाक्यांश किसने नहीं देखे या पढ़े होंगे? आप सहज ही सोच सकते हैं कि कामजन्य क्षमता को बढ़ाने एवं विकारी मर्दानगी प्राप्त करने की लालसा ने इंसान को इतना नीचे गिरा दिया है कि वह वास्तविक मर्दानगी को नष्ट करने वाली क्रियाओं, दवाओं, संगतियों एवं हकीमों में मर्दानगी की तलाश का मूर्खतापूर्ण कार्य कर रहा है।

विकारी मानसिकता के फलस्वरूप मनुष्यों ने पौरुष एवं मर्दानगी की परिभाषा भी विकारजनित अर्थों में ही बना डाली है। वे यह भी कहते हैं कि काम को करने में जो दम और ताकत लगा सके, उसी को दमदार एवं मर्द कहते हैं। चलो इस कसौटी पर भी अपनी मर्दानगी नाप ही लेते हैं। ज़रा ईमानदारी और गहराई से सोचें कि जिस काम को हम कर लेने को मर्दानगी कहते हैं अथवा जिसे कर पाने की शक्ति की प्राप्ति हेतु तमाम तरह के ड्रग्स एवं विआगरा जैसे खतरनाक और अति उत्तेजक रसायनों का इस्तेमाल करते हैं, उस काम को तो कीट-पतंगे, कुत्ते-बिल्ली, गधे, खच्चर, सूअर एवं नाली में बिलबिलाने वाले पुछिल्ले कीड़े भी बड़ी आसानी से और बिना किसी विआगरा के कर लेते हैं, क्या इसी को आप मर्दानगी और पौरुष शक्ति कहते हैं? दूसरी बात, आप ही सोचिये, काम विकार को करने में ज्यादा दम लगता है या फिर काम विकार के परित्याग में? सामान्य एवं सांसारिक दृष्टिकोण से उत्तर आप यही पायेंगे कि काम के सेवन में कोई खास मेहनत, तपस्या, दम या फिर मर्दानगी नहीं लगती। असली दम, ताकत, मर्दानगी, पुरुषार्थ और औकात का पता तो तब चलता है जब हम काम का परित्याग करते हैं अथवा पवित्र बनते हैं।

भोगों का सेवन कर पाना मर्दानगी नहीं है बल्कि पवित्रता को जीवनपर्यंत कायम रख पाने की योग्यता ही असली मर्दानगी एवं वास्तविक पौरुष है। भले ही लोग कहते हैं कि पवित्रता के आचरण में ज्यादा मेहनत लगती है मगर जब आत्मा विकारी चमड़े के आकर्षणों से ऊपर उठकर प्यारे प्रभु के प्यार में लवलीन हो जाती है तो काम विकार का त्याग अर्थात् पवित्रता का आचरण उसके लिए अत्यंत सहज एवं सुखकारी बन जाता है। बात को नकारने के बहाने हठधर्मी वाली विचारधारा को उत्तर के रूप में प्रस्तुत करने की जिद्द भी एक प्रकार की मानसिक नपुंसकता का ही प्रतीक है। इसके विपरीत किसी सत्य और कल्याणकारी बात को सहज सहर्ष स्वीकार कर उसे धारण कर लेना ही सच्ची मर्दानगी की पहचान है।

समय का ज्ञान बुद्धि में रखते हुए अब आप भी ईश्वरीय श्रीमत के आधार से पवित्र बनने एवं बनाने का सच्चा मर्दानगी भरा पुरुषार्थ करें। आशा है कि आप इस लेख का संदेश ध्यान में रखकर विकारी मर्दानगी के तलाश के बजाय अब आध्यात्मिक पुरुषार्थ का सराहनीय कार्य अवश्य करेंगे। ❖

श्मशानी तंत्र से मुक्ति

● डॉ. पुष्पेन्द्र शर्मा, गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)

बात सितंबर, 2001 की है, मैं डॉ.संपूर्णानन्द मेडिकल कॉलेज, जोधपुर का एम.बी.बी.एस. अंतिम वर्ष का छात्र था। परीक्षायें नज़दीक थी। मेरे एक दोस्त ने धोखेबाजी से तांत्रिक द्वारा श्मशानी तंत्र की भभूत मुझे यह कहकर खिला दी कि यह हमारे देवता की भभूत है। उसे खाने के 5 मिनट के अंदर मेरा दिमाग सुन्न-सा होने लगा। उस दिन किताब की एक लाइन को लेकर 5 घंटे बैठा पर पढ़ नहीं पा रहा था। पूरी परीक्षायें इसी तरह अधूरी पढ़ाई करके दीं। जैसे-तैसे पास हुआ। तंत्र के प्रभाव से मुझे एक प्रकार का डिप्रेशन हो गया। साथ ही विचित्र प्रकार के ऐसे लक्षण आने लगे कि मुझे दूसरों के चेहरे कुरूप नज़र आने लगे। डिप्रेशन की दवाई कुछ राहत देती लेकिन इस विचित्र लक्षण को डॉक्टर भी नहीं समझ पा रहे थे।

व्यसनों की लत लगी

मेरा परिवार धार्मिकता से व भक्ति के संस्कारों से ओत-प्रोत है अत: कई धार्मिक अनुष्ठान करवा लिये। लगभग 4 साल तक मैंने शिव-साधना की। उससे चेहरे कुरूप दिखने वाली प्रक्रिया में थोड़ी-सी राहत मिली परंतु ज़िन्दगी की पटरी सामान्य नहीं हुई। इसी मध्य मेरी शादी भी हो गई थी तथा सरकारी नौकरी गुलाबपुरा, भीलवाड़ा में लग चुकी थी। बीमारी के कारण पत्नी भी एक-दो महीने में मायके चली गई। मेरी हालत थोड़ी सही हुई तो बड़ी मुश्किल से वापस आई। तनाव में बहुत अधिक सिगरेट पीने और गुटखा खाने की लत लग गई। नींद व दिनचर्या अस्त-व्यस्त रहती थी।

मुरली से मिलता रहा समाधान

सन् 2008 में एक दिन मैं शिव-साधना में व्यस्त था, शिव-मंत्रों का जाप कर रहा था। तभी मेरे एक परिचित अपनी माँ के इलाज के लिए मेरे घर आये और कमरे में बैठ गये। जब मैं पूजा से उठा तो उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया कि आप इतनी एकाग्रता से पूजा में बैठे थे जो हमारे आने का पता तक नहीं लगा। उनकी माँ ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र से जुड़ी हैं, उन्होंने मुझे वहाँ का पता दिया। मैं सेवाकेन्द्र गया, सात दिन का कोर्स किया परंतु कोर्स में मुझे कुछ नया अनुभव नहीं हुआ इसलिए नियमित मुरली सुनने नहीं जाता था। हाँ, जब ज्यादा चिन्ता होती तो मुरली पढ़ता और मुझे मुरली में समाधान मिल जाता।

योग में हुई बाबा से बातें

आखिर मेरी ज़िन्दगी का सुनहरा दिन आया 24 अप्रैल, 2010 को, उस दिन मैं, मेरी पत्नी व एक मित्र

सेवाकेन्द्र की संचालिका दीदी के साथ मधुबन पहुँचे। प्रथम दिन का अमृतवेला सुबह 4 बजे उठकर किया। अगली रात को स्वप्न में देखा कि चार सफेद पोशाकधारी ब्रह्माकुमार मेरे शरीर से मेरी काली खाल की परत को खींचकर उतार रहे हैं। तभी मेरी नींद खुल गई। मैं पसीने से भीगा हुआ था, धड़कन बढ़ी हुई थी। मैं योग लगाने बैठ गया। योग में पहली बार शिव बाबा से बात हुई। बाबा बोले, मैंने तेरा तंत्र जो कि श्मशानी था, श्मशान में जाने के बाद ही छूटता है, उतार दिया है। बाबा से बात करते ही संतुष्टि तथा अपार खुशी का अहसास हुआ। उसके बाद मधुबन में हर कदम पर बाबा का अनुभव होने लगा। ब्रह्मा भोजन से तृप्ति होने लगी। क्षण के लिए भी घर व अस्पताल याद नहीं आया। मन में आनन्द ही आनन्द भरने लगा। पीस पार्क में शिवलिंग को फव्वारों के नीचे स्थापित देखकर दिव्य सुख की

अनुभूति हुई।

मैं बाबा का बन गया

अवकाश सीमित थे, हमें वापिस आना था। मैंने योग में बाबा से कहा, बाबा, मैं एक दिन और रुकना चाहता हूँ पर छुट्टी नहीं है। मेरे इतना कहते ही मेरे मोबाइल की घंटी बजी, मेरे मकान मालिक ने बताया कि आज राज्यपाल दिवंगत हुए हैं इसलिए राजकीय अवकाश है, आप चाहें तो एक दिन और रुक सकते हैं। मेरी आश्चर्यमिश्रित खुशी की सीमा नहीं रही। उसी क्षण से मैं बाबा का बन गया। **मधुबन से आने के बाद नियमित रूप से मुरली सुनता हूँ। भोलेनाथ के समक्ष क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों का त्याग कर आया हूँ। इन पर काफी हद तक काबू पा लिया है। संबंध अच्छे हो गये हैं। कार्य में पहले से अच्छा मन लगता है। दिनचर्या सुधर गई है। व्यर्थ समय गंवाना बंद हो गया है। मधुबन में मेरी समझ में आया कि सारे ज्ञान जहाँ समाप्त होते हैं, वहाँ से तो शिवबाबा के ज्ञान की शुरूआत होती है। धन्य है मेरा भाग्य जो मुझे स्वयं परमात्मा की पढ़ाई पढ़ने का अवसर मिल रहा है।** मैं समस्त आत्माओं से निवेदन करना चाहता हूँ कि सभी शिव बाबा को जानें तथा जन्म-जन्म का भाग्य बनायें।

❖

धन के चौकीदार न बनें

ब्रह्माकुमारी अमिता मराठे, इन्दौर

कई बार मनुष्य कम व्यस्त होता है। उस खाली समय का सदुपयोग वह स्वयं से वार्तालाप करने में करे तो उसे कई प्रश्नों के सहज व सही उत्तर मिल सकते हैं, जैसे, मैं धन का संचय क्यों करना चाहता हूँ? मेरा सुख किसमें है? क्या मेरा धन-संचय मेरे लाभ में रहेगा? क्या यह जो मेरे पास है, साथ में जायेगा? नहीं जाएगा तो जरूरतमंदों को धन देकर उनकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने में धन का भी और मेरा भी, दोनों का ही कल्याण है। इस प्रकार का आत्मचिन्तन उसका अपना है, जो उसको सही निर्णय पर पहुँचाने में समर्थ है।

इस सम्बन्ध में एक राजा की कहानी पठनीय है। राजा समर्थ और स्वतंत्र चिन्तन का धनी था। वह विद्वानों और साहित्यकारों को बहुत प्रोत्साहन और खुले हाथों से दान देता था। विद्वानों को कभी गरीबी का अहसास नहीं होने देता था। राजा के इस तरह धन बांटने के कारण राजकोष थोड़ा खाली होने लगा, अधिकारीगण चिन्तित हो उठे। एक अधिकारी ने राजा से निवेदन किया, 'राजन, आपके पुरखों, पूर्वजों ने बहुत धन संचय किया, खजाना भरा, आप उसे खुले हाथों लुटा रहे हैं, इस तरह तो यह बिल्कुल खाली हो जायेगा, क्या आपको ऐसा करना चाहिए' इस पर कुछ चिन्तन अवश्य करें। राजा ने कहा, जो कर रहा हूँ, सोच समझकर कर रहा हूँ। तुम ठीक कहते हो, पूर्वजों ने धन एकत्रित किया लेकिन क्या मैं उनके धन का चौकीदार हूँ? मैं चौकीदार नहीं हूँ, मैं राजा हूँ। रखवाली करना चौकीदार का काम होता है। अगर मेरे पिता ने मुझे चौकीदार बनाया होता तो मैं एक पैसा भी खर्च नहीं होने देता, चोरी भी नहीं होने देता पर मैं चौकीदार नहीं, मालिक हूँ। मैं खजाने को भर भी सकता हूँ और खाली भी कर सकता हूँ। मालिक बनकर अगर मैं राजकोष के पैसों से राज्य के विद्वानों की सहायता करता हूँ, उन्हें प्रात्साहन देता हूँ, उन्हें उत्साहित करता हूँ, तो इसमें भी राज्य का हित है।

कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि हम इकट्ठे किये हुए धन की सम्भाल और सुरक्षा में ही ना लगे रहें बल्कि समय की मांग अनुसार उसका सदुपयोग कर पुण्य भी अवश्य अर्जित करें। ❖

शुभ भावनाओं का सुप्रभाव

● ब्रह्माकुमार के.एल.छाबड़ा, रूड़की

गांधी जी के तीन बंदर तीन बुराइयों 'बुरा न देखो, बुरा न बोलो, बुरा न सुनो' से बचने के प्रतीक चिन्ह हैं। ये तीनों बातें अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण हैं परंतु तीनों बातों का आधार मानव मन की सोच पर है। यदि सोच ठीक है तो मनुष्य सभी बुराइयों से तो बच ही सकता है, साथ ही जीवन में पग-पग पर आने वाली उलझनों, समस्याओं के तनाव में न पड़कर उनसे सहज उबर भी सकता है।

हमारी मन:स्थिति अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों की जनक है। हमारे सोचने के ढंग का हमारे जीवन से तो गहरा संबंध है ही, साथ ही संपर्क-संबंध में आने वाले प्राणियों पर, वातावरण पर, प्रकृति और निर्जीव चीज़ों पर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि पुराने समय में वनों में तपस्या करने वाले या बस्ती के बाहर जंगलों में आश्रम बनाकर रहने वाले ऋषि-मुनियों पर हिंसक जानवर भी हमला नहीं करते थे। निर्भय होकर आसपास विचरण करते थे।

अद्‌भुत हैं विचार तरंगें

कभी-कभी कोई समय काम करते समय मन में अचानक किसी मित्र-संबंधी की याद आ जाती है जबकि उसका उस कार्य से कोई संबंध नहीं होता, ऐसा क्यों होता है? इसका कारण यह है कि उस समय उस व्यक्ति ने, जिसकी आपको अचानक याद आई, आपके बारे में गंभीरता से सोचा था जिससे विचार तरंगों द्वारा आपको संदेश प्राप्त हुआ। जिस प्रकार मोबाइल के माध्यम से हम किसी भी दूरस्थ व्यक्ति से संपर्क साध सकते हैं; टीवी, रेडियो के प्रोग्राम देख-सुन सकते हैं (इनमें विद्युत-चुंबकीय तरंगें, इलैक्ट्रो मैगनेटिक वेव्ज कार्य करती हैं), उसी प्रकार हमारी विचार तरंगें भी अन्य मनुष्यों तक पहुँचती हैं।

एक बार की बात है, किसी शहर में एक भाई किसी कार्यालय में नौकरी करते थे। उस भाई के बॉस बड़े तुनकमिजाज़ थे। कोई कार्य उनकी अपेक्षानुसार नहीं होता था तो अधीनस्थ कर्मचारी की वो ऐसी क्लास लेते थे कि वह भीगी बिल्ली बनकर खड़ा रहता था। उनके कोप का भाजन बने कर्मचारी का मूड ऐसा खराब हो जाता था कि घर जाकर परिवारजनों से ठीक से बात भी नहीं कर पाता था, भूख खत्म हो जाती थी, घर के वातावरण से रमणीकता गायब हो जाती थी। इस भाई के मन में बॉस के डर के साथ-साथ नौकरी से निकाल दिये जाने का डर भी था। इस प्रकार तनाव और भय में रहने के कारण उसकी कार्यक्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगा।

कहते हैं कि मन की अवस्था का प्रभाव चेहरे पर दिख जाता है। एक दिन कहीं दूसरे शहर में उस भाई को उसका एक मित्र मिला। उसे सहमा-सहमा पाकर मित्र ने कारण पूछा। उसने मित्र को अपनी परिस्थिति से अवगत कराया। संयोग से वह मित्र ब्रह्माकुमारी विद्यालय का विद्यार्थी है। उसने उसे ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर जाकर राजयोग सीखने की सलाह दी जो उसने मान ली। राजयोग सीखने के बाद उसने अपनी परेशानी सेवाकेन्द्र की बहन को बताई। ब्रह्माकुमारी बहन ने उसे हिम्मत बंधाई और कहा कि वह रोज अमृतवेले 5-10 मिनट अपने बॉस के प्रति शुभ संकल्प रखे जैसे कि बॉस उसे बहुत चाहता है, उसके कामकाज से खुश है। बॉस को शांति-प्रेम के प्रकंपन भी दे।

भाई ने यह प्रयोग लगभग दो सप्ताह ही किया था कि उसे बॉस का संदेश मिला, अगले दिन सुबह (रविवार) मुझे मेरे घर पर मिलो। संदेश मिलने के बाद उस भाई के मन में और ज्यादा भय बैठ गया कि शायद मेरे से कोई बड़ी भूल हो गई है जो मुझे बॉस ने घर बुलाया है, चेहरा उदास हो गया और भूख खत्म। वह मुश्किल से आश्रम पर जा पाया और ब्रह्माकुमारी बहन से कातर स्वर में बोला, बहनजी,

बॉस ने मुझे कल घर पर मिलने के लिए संदेश भेजा है। बहन जी, बड़ी मुश्किल से तो नौकरी मिली थी, ज़रूर उसने मेरे काम में कोई गलती निकाली होगी, अब तो अवश्य ही मेरी छुट्टी हो जायेगी। बहुत गुस्से वाला बॉस है। पता नहीं मेरा क्या हिसाब-किताब है जो ऐसा बॉस पल्ले पड़ा है। उसके साथ तो कोई खुश रह ही नहीं सकता। ऐसा भी क्या आदमी है जो कभी ठीक से बोले ही नहीं और हर वक्त पारा बस आसमान पर ही चढ़ा रहे। बहन जी, ऐसे आदमी पर शुभभावनाओं का क्या प्रभाव पड़ेगा जिसमें मानवता नाम की चीज़ ही न हो। बुलाया है, जाना तो पड़ेगा ही, न जाने से भी तो काम नहीं चलना। भगवान से क्या बुद्धियोग लगेगा, मन में तो उसके डर का भूत बैठा रहता है।

बहन ने उस भाई को हिम्मत बंधाई कि कल की चिन्ता में अभी क्यों संकल्प-विकल्प कर रहे हो, चिन्ता छोड़ शिवबाबा (भगवान) को याद करो। ठीक से खाओ-पीओ। अमृतवेले योग में उसे फिर शुभभावना की सकाश देना। उसको लेकर सकारात्मक ख्याल करना।

बदल गया बॉस का व्यवहार

अगले दिन क्लास करने के बाद डरते-डरते वह भाई अपने बॉस के सम्मुख गया तो बॉस ने जो व्यवहार किया, उसकी उस भाई ने कभी कल्पना भी न की थी। बॉस ने कहा, उसे अपने व्यवहार के लिए बहुत खेद है, वह उसके कार्य करने के तरीके, उसकी क्षमता, लगन व व्यवहार से संतुष्ट है। साथ-साथ उस भाई के मासिक वेतन में तुरंत वृद्धि करने की घोषणा भी की।

विपरीत परिस्थिति में स्वस्थिति

इस घटना से इस बात को बल मिलता है कि एक व्यक्ति की विचार शक्ति अन्य मनुष्यों की मनोवृत्ति बदल सकती है। उनमें प्रेम, सद्भाव उत्पन्न कर सकती है। शुभभावना के श्रेष्ठ संकल्प से किसी की बुराई का अच्छाई में परिवर्तन किया जा सकता है। विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी स्थिति दूसरों के प्रति शुभभावना युक्त बनाना एक श्रेष्ठ संस्कार है। गलती तब होती है जब हम किसी भी परिस्थिति का अपने ढंग से आकलन कर लेते हैं और अपनी मन:स्थिति अनुसार सोच निर्मित हो जाने देते हैं परंतु यह ज़रूरी नहीं कि घटनाक्रम हमारे सोचे अनुसार ही घटित हो। ठीक है, हमें हर परिस्थिति के लिए अपने आपको तैयार करना चाहिए पर नकारात्मक चिन्तन में ऊर्जा नष्ट करना कहाँ की अक्लमंदी है। किसी विद्वान का कथन है – **अच्छी से अच्छी उम्मीदें करो परंतु बुरी से बुरी परिस्थितियों के लिए तैयार रहो।**

शुभभावना से बढ़ता है आत्मविश्वास

जैसे अनावश्यक वस्तुओं का बोझ शरीर को भारी कर देता है उसी प्रकार नकारात्मक व अशुभ विचारों का बोझ मन को भारी कर देता है। तन-मन से उतना ही उठाइये जितना आवश्यक है। अनावश्यक, अशुभ और व्यर्थ विचार बुद्धि में भरकर बुद्धि को बोझिल रखने से हमारा अमूल्य समय और शक्ति नष्ट होती है। अधिकतर हम वर्तमान में नहीं रह पाते जिससे हम जो कार्य कर रहे होते हैं उसकी गुणवत्ता पर भी प्रभाव पड़ता है। अशुभ चिन्तन जितना मनुष्य को जीर्ण कर सकता है उतना कोई नहीं करता। **जिनमें शुभ चिन्तन का अभाव है ऐसे मनुष्य पहले तो स्वयं के साथ ही न्याय नहीं कर पाते, उन्हें अपनी सफलता के प्रति सदा संदेह बना रहता है कि मैं फलां कार्य में सफल हो पाऊँगा या नहीं यानि आत्मविश्वास खत्म हो जाता है। जीवन में आने वाली छोटी-छोटी घटनायें उन्हें बड़ी लगती हैं और उनसे पार पाना बहुत मुश्किल जान पड़ता है। उनकी कार्यक्षमता घट जाती है। इसके विपरीत शुभ चिन्तन वाला उमंग-उत्साह में रहता है, आत्मविश्वास से भरा होता है, उसे परिस्थितियाँ खेल लगती हैं, वह आशावादी होता है और दूसरों को उस पर विश्वास रहता है।** उसको दूसरों का सहयोग स्वत: मिलता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन औरों के लिए प्रकाशमय दीपक है। इसलिए जीवन को सुख से जीना है तो सदैव स्वयं व

अन्यों के प्रति शुभभावना रखें।

खुशी का आधार हैं शुभ संकल्प

जब हमारी किसी से अनबन हो जाती है, मन मुटाव हो जाता है तो हमारे मन में उसके प्रति ईर्ष्या एवं नफरत के संकल्प चलने लगते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि हमारे दिलों की दूरी बढ़ जाती है, संबंधों में खटास आ जाती और हम अंदर ही अंदर जलते-भुनते रहते हैं। इसके विपरीत, शुभ संकल्पों में रहने से प्रत्यक्ष रूप में दो फायदे होते हैं – पहला तो यह कि हमारी खुशी बनी रहती है, कुढ़ना छोड़ देने से खून साफ रहता है जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है। दूसरा फायदा यह होता है कि अमुक आत्मा के प्रति शुभ-सकारात्मक संकल्प रहने से हमारे में नम्रता का भाव बना रहता है और कुछ अंतराल के बाद हमारे संबंध पुनः सामान्य हो जाते हैं।

शुभभावनाओं से सफलता

यह अनुभवजन्य तथ्य है कि किसी के संस्कारों को बदलने में वाचा की अपेक्षा शुभ संकल्प ज्यादा प्रभावकारी होते हैं। सर्व के प्रति शुभकामनायें हमारे जीवन को ऊँचाई पर पहुँचाने में लिफ्ट की भूमिका अदा करती हैं। शुभकामनाओं की शक्ति मनुष्य को कम परिश्रम में अधिक सफलता प्राप्त कराती है। दिल की शुभभावना मानव को देवतुल्य बना देती है। जो जीवन के उतार-चढ़ाव में भावनाओं को श्रेष्ठ रखता है तथा हर अच्छे-बुरे स्वभाव वाले व्यक्ति के प्रति शुभभावनाओं को जारी रख पाता है, वह ही महान कहलाता है। वह सर्व का प्रिय बन जाता है। बस इतनी-सी कला हमारे में आ जाये तो हमारा भला निश्चित है। जिस प्रकार अस्वस्थ को दवा की ज़रूरत है, स्वस्थ को नहीं। इसी प्रकार जो विकारों की पीड़ा से ग्रसित हैं, ईर्ष्या-द्वेष व नफरत की भावना से भरे हैं, ऐसों के प्रति भी खूब शुभभावना रखनी है। तभी हम सही मायनों में अपना व समाज का कुछ भला कर पायेंगे और भगवान के प्रेमपात्र बन पायेंगे। ❖

ज्ञान मिला, व्यसन छूटे

करीब 30 वर्षों से मैं शराब पीता था, बाद में शराब के साथ, 20 सिगरेट रोज़ पीने लगा। मेरी युगल इस कारण बहुत दुखी थी, आखिर दुखी जीवन जीते हुए वह 2005 में शरीर छोड़ गई। मेरी एक बेटी है। उसकी शादी हो चुकी है। मेरे सब पैसे तो शराब और सिगरेट में खत्म हो जाते थे। इस कारण लड़की के मामा जी ने उसकी शादी की। पिछले पाँच वर्षों से मैं ईश्वरीय ज्ञान में हूँ। जब से ज्ञान में आया, शराब, सिगरेट पीना बंद हो गया।

अभी मैं रात्रि को बेटी के घर ही सोता हूँ और खाना सेन्टर में खाता हूँ। सेन्टर पर बहनों के दिशानिर्देश अनुसार सेवा करता हूँ। मेरा कोई घर नहीं है। अपने अनुभव के माध्यम से यह संदेश दे रहा हूँ कि मेरी तरह कोई भी सिगरेट एवं शराब पीकर शरीर, इज्जत, समय और पैसा बर्बाद न करे। व्यसन की लत वाला मैं जीवन भर एक घर भी नहीं बना सका। धन्य है मेरा बाबा जिसने मेरा जीवन बना दिया। मैं टेलरिंग का काम जानता हूँ, कर्मयोगी होकर मधुबन टेलरिंग विभाग में भी सेवा करता हूं।

– ब्रह्माकुमार सुदेश भाई, कपूरथला

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी

नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है।

अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान

मोबाइल: 09413240131 **फोन:** (02974) 238347/48/49

वेबसाइट: www.ghrc-abu.com **फैक्स:** (02974) 238570

ई-मेल:drmurlidharsharma@gmail.com

दृढ़ता दिलाती है सफलता

● ब्रह्माकुमारी संगीता, सूरत

हम सभी कर्मक्षेत्र की बगिया में अपने-अपने कर्म रूपी फूलों को उपजाते हैं और जीवन को महकाने में लगे रहते हैं। इसमें कई बार हमें सफलता मिलती है और कई बार मायूसी छा जाती है। हर व्यक्ति जीवन में सफलता रूपी महक की इच्छा रखता है। ऐसे बहुत हैं जिन्होंने सफलता हासिल भी की है। अधिकतर सफलतम व्यक्तियों ने कुछ नये गुणों या प्राप्त अवसरों द्वारा ही मंज़िल को प्राप्त किया है। व्यक्ति सफल रूप से पैदा नहीं होते बल्कि वे सफलता का सृजन करते हैं।

सफलता है आत्मविश्वास का नतीजा

जीवन को महकाना यानि सफलता हासिल करना। सफलता कोई अजूबा नहीं है। यह तो सिर्फ बुनियादी उसूलों को लगातार पालन करने का नतीजा है। सफलता प्रेरणा, आकांक्षा और मेहनत का परिणाम है। जब तक अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल न हो जायें, सच्ची लगन, धैर्य, संयम, समर्पण व उत्साह के साथ कार्य में जुटे रहना होगा। इससे सफलता के ऊँचे पायदान पर चढ़ सकेंगे और सपनों को साकार कर सकेंगे। सफलता तभी हासिल होती है जब विश्वास हो कि जिस कार्य का बीड़ा हमने उठाया है, उसे हम पूरा करके ही रहेंगे। यदि असफलता का भय है तो वह सदैव प्रगति में बाधक रहेगा।

रचनात्मकता को कुंठित करता है भय

कहते हैं, 'जैसी सोच वैसा कर्म' और 'जैसे विचार वैसे आचार'। यदि सदैव असफलता की बात सोचेंगे तो सदैव असफल ही रहेंगे। असफलता का भय अपने भीतर से उस तत्व को नष्ट कर देता है जो सफल बना सकता था। भय न केवल रचनात्मक शक्ति को कुंठित करता है बल्कि मन और मस्तिष्क दोनों को ही शिथिल बना देता है। अत: जो भी कार्य करना चाहें, उसे पूरी हिम्मत, साहस एवं धैर्य से करें। किसी भी प्रकार के भय को अपने मन में आश्रय न दें।

संस्कार, स्वभाव या आदत ही व्यक्ति को भीड़ के बीच में भी एक अलग पहचान देते हैं। ये केवल इसी जन्म के नहीं होते बल्कि पूर्वजन्म के भी होते हैं। इसलिए तो कितने ही लोग छोटी उम्र से ही अपनी अलग पहचान बनाने में लग जाते हैं। जो अच्छे संस्कारों के साथ जन्म लेते हैं वे छोटी उम्र से ही श्रेष्ठ व महान कार्य करने लग जाते हैं। इसलिए कहावत प्रचलित है – बच्चों के लक्षण पालने में ही पता पड़ जाते हैं। इसी पर एक छोटी सी घटना याद आती है –

बालक सुखदेव चार-पाँच वर्ष की उम्र में ही ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने घर से निकल पड़े। सुखदेव के पिता महर्षि वेदव्यासजी को जब पता चला तो उन्होंने सुखदेव को रोका और कहा, तुम्हारी उम्र तो मेरी गोद में बैठकर लाड़ प्राप्त करने की है, अभी तुम कहाँ जा रहे हो? परंतु, बालक सुखदेव का निश्चय दृढ़ था। उन्होंने पिताजी से कहा कि आप मुझे ना रोकें क्योंकि यदि मैं एक बार संसार के माया-जाल में जकड़ा जाऊँगा तो कभी भी ब्रह्मज्ञान प्राप्त नहीं कर पाऊँगा। विविध प्रकार से समझाने के बाद भी बालक सुखदेव अपने निर्णय पर अडिग रहे। दृढ़ इरादे एवं अटूट संकल्प के स्वामी बालक सुखदेव ही ब्रह्मज्ञानी सुखदेव के नाम से विश्व विख्यात हुए। इसलिए जिनके इरादे पर्वत की तरह दृढ़ होते हैं, वे ही कैसी भी परिस्थिति में अपनी मंज़िल को हासिल कर लेते हैं।

उद्देश्य स्थिर हो

जिसका उद्देश्य स्थिर है, उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। बड़े से बड़े शिक्षित, परिश्रमी और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति भी ऐसे व्यक्ति का मुकाबला नहीं कर सकते। बालक सुखदेव की तरह अभीष्ट कार्य में सफलता प्राप्त करना ही अपने जीवन का मूल उद्देश्य होना चाहिए। अत: अपना सब कुछ ध्येय

की प्राप्ति के लिए दांव पर लगा दें और देखें कैसे सफलता चरण चूमती है।

उद्देश्य प्राप्ति में मन बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। मन में नवीन विचारों का सृजन करें। अच्छे विचारों को अपने मन में पालें एवं दृढ़ संकल्प के साथ अपने कार्य में जुट जायें। कहते हैं, जब कोई मनुष्य अपने काम में पूरी निष्ठा के साथ जुट जाता है और पूर्ण प्रयास करता है तो उसे मन में शक्ति और उत्साह का अनुभव होता है। यदि वह उसी काम को किसी अन्य तरीके से करता है तो उसे ऐसी शक्ति व उत्साह कभी भी हासिल नहीं होते। इस बात का कोई महत्व नहीं कि आप क्या काम करते हैं। कोई भी काम हो, आपको उसे इस प्रकार करना चाहिए कि वह आपका अपना है।

जीत जीवटता और आत्मविश्वास की

वर्षा के देवता इंद्र ने किसी बात पर कुपित होकर आकाशवाणी कर दी कि तीन वर्ष तक धरती पर पानी की बूंद भी नहीं पड़ेगी। आषाढ़ का महीना आ पहुँचा, इंद्र ने देखा कि एक बूढ़े किसान ने चट्टान जैसी कठोर धरती की छाती पर हल चलाना शुरू कर दिया। इंद्र आदमी का रूप बनाकर सामने आया और कहा, मूर्ख आदमी, तुम्हें पता है कि तीन वर्ष तक वर्षा नहीं होगी, खेत में आकर व्यर्थ श्रम करने से क्या लाभ, क्या तुमने इंद्र की घोषणा नहीं सुनी? किसान ने कहा, सुनी है लेकिन उनकी घोषणा पर मैं अपना पेशा और अभ्यास क्यों छोड़ दूँ? तीन वर्ष तक हाथ पर हाथ रखकर बैठने का मतलब तुम जानते हो? यदि हल चलाने का अभ्यास न रहा तो मैं पूर्वजों से सीखा हुआ खेती का सारा ज्ञान भूल जाऊँगा। हामरी संतानें भी अकर्मण्य होकर रह जायेंगी इसलिए मैं अपना अभ्यास जारी रखूँगा, इंद्र की बात इंद्र जाने। किसान की जीवटता और आत्मविश्वास भरी बातें सुनकर इंद्र ने सोचा कि जब यह बूढ़ा किसान अपने कर्म से मुँह नहीं मोड़ रहा है तो भला मैं क्यों मोडूँ। तुरंत घनघोर बारिश शुरू हो गई।

कार्य को करते समय काम में ही अपना ध्यान पूर्णतया केन्द्रित कर दें। यह चिन्ता न करें कि उसका परिणाम क्या होगा? हाँ, गलत दिशा में किया गया प्रयास अपनी शक्तियों को गँवाने के सिवाय कुछ भी नहीं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति यदि सारी उम्र भी काम करता रहे तो भी जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। अत: मन को एकाग्र करना सीखें। ❖

छूट गई नींद की गोली

ब्रह्माकुमारी सुषमा बहन, मुम्बई (दादर, ईस्ट)

मेरी उम्र 42 वर्ष है। सन् 2012, 27 अगस्त मेरे युगल का निधन हुआ। लगभग एक मास बाद मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में ज्ञान सीखने आयी। मेरी अवस्था बहुत ही नाजुक थी। रात को नींद की गोली लिए बिना सो नहीं सकती थी और डिप्रेशन के कारण पागलपन जैसी स्थिति में थी। जरा-जरा-सी बात पर रोना आता था। मेरी दो लड़कियाँ पढ़ रही हैं। मेरे और बच्चों के लिए, बच्चों के पापा ही सब कुछ थे। मुझे उन की यादें बहुत सताती थीं। मेरी ऐसी अवस्था देखकर साथ के घर में रहने वाली बहन, जो ब्रह्माकुमारीज़ में जाती है, मुझे सेवाकेन्द्र पर ले कर आयी। मैंने ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स शुरू किया और दूसरे दिन से ही मुझे जीवन क्या है, हमें जीवन कैसे जीना है, इन सब बातों की जानकारी मिल गई। यहाँ आने के बाद उसी दिन से नींद की गोलियाँ छूट गई और मैं धीरे-धीरे संभलने लगी। मैंने बहुत सत्संग किए लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्था कहीं नहीं देखी। यहाँ मुझे और मेरे बच्चों को माँ का प्यार मिला। मुझे बहुत हिम्मत मिली। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ, मुझे ऐसा दैवी परिवार मिला, मीठे प्यारे बाबा मिले। इतने कम समय में बाबा ने खुद को संभालना सिखाया, आत्मनिर्भर बनाया, जीने की प्रेरणा दी और खुद में उम्मीद जगाई। आज मैं खुशी से जीवन जी रही हूँ। अब दिल से यही गीत निकलता है, बाबा मिला सब कुछ मिला, बाबा आपने कमाल कर दिया।

विवाह या वाह–वाह

● ब्रह्माकुमारी अनुभा, अलवर

एक गाँव में एक लड़की की शादी हुई पर उसने असमय शरीर छोड़ दिया। उसका गाड़ी चालक पति अपनी गाड़ी लेकर रोज़ ससुराल घर में आ जाता और ज़िद्द करता कि मुझे इसी घर से दूसरी लड़की पत्नी रूप में चाहिए। वह शराब भी पीता था और देखने में मोटा-तगड़ा था। लड़की वालों ने बहुत मना किया पर रोज़-रोज़ की उसकी मांग देखकर दिवंगत लड़की की चचेरी बहन, जो मात्र 5 क्लास तक पढ़ पाई थी और 15 वर्ष की थी, के साथ उसकी दुबारा शादी की। इन दोनों की शादी के साथ-साथ ही वर के छोटे भाई (भैंस चराने वाले अनपढ़ 10 साल के बच्चे) तथा वधू की छोटी बहन पहली कक्षा में पढ़ने वाली 6 वर्ष की कन्या) की भी शादी रचा दी गई।

कुछ दिन बाद पता चला कि वह शराबी पति हर रोज़ उस नाबालिग पत्नी को पीटता है, तरह-तरह के अत्याचार करता है। शिकायत माँ-बाप के पास आई, उसे समझाया गया पर वह नहीं बदला और लड़की अत्याचार झेलती रही। इसी बीच छोटी बहन, जो पहली कक्षा में पढ़ रही थी, लगन से पढ़ते-पढ़ते मास्टर डिग्री तक जा पहुँची और बालपन में बनाया गया उसका दूल्हा भैंस-गाय चराने का धन्धा ही करता रहा। अब घरवालों को चिन्ता लगी कि इस बेमेल शादी का निबाह कैसे होगा? गांव के कुछ समझदार लोगों के सहयोग से बाल विवाह को कानूनन रद्द किया गया और उस कन्या को सुशिक्षित, चरित्रवान वर के हाथों सौंपा गया।

अपनों की बनाई बलिवेदी

इस सारी कहानी का सार यह है कि बाल विवाह करना, अपने हाथ से बलिवेदी बनाकर बच्चे का बचपन झोंकने जैसा है। आज भी गाँवों में संकीर्ण सोच, रूढ़िवादिता, चिंता, भय और पुरातन परंपरायें मासूमों से उनके बचपन को छीन रही हैं। उसमें सबसे अधिक कुर्बानी एक लड़की को देनी पड़ती है। समाज में अक्सर ऐसी तस्वीरें देखने को मिल जायेंगी – कम उम्र, अव्यस्क शरीर, आँखों में मासूमियत, चेहरे पर उदासी, दो-चार बच्चों को संभालते नन्हे हाथ, मायूस मन, व्यसनों को मुख से लगाये बेपरवाह पुरुष पति की प्रताड़ना, सास की कठोरता, चूड़ियों की बेड़ियों में उठती आहें, सामर्थ्य से ज्यादा कर्म का भार, रोगों से अशक्त शरीर, घुटती-सिसकती ज़िंदगी। बाल विवाह की त्रासदी को झेलती ऐसी हर

बाला अपने अपनों से पूछती है –

नन्हीं सी कली मैं माँ,
तू ही तो थी मेरी माली।
फूल बनने से पहले ही,
क्यों डाली से तोड़ डाली।
कुचली गई, कुम्हला गई,
खुशी की खुशबू से रही खाली।
तेरे हाथ भी मेरे साथ नहीं,
तूने तो शायद अपनी विपदा टाली।
अब यह ज़िंदगी मुझसे
जाये ना संभाली।।

असमय ज़िम्मेवारी का भार

क्या जीवन का, जीने का एक मात्र उद्देश्य शादी ही है जिसकी माता-पिता को इतनी जल्दी लग जाती है और वे पढ़ाई, लिखाई या अन्य किसी भी प्रकार की योग्यता भरने की बात को दर-किनार करके केवल इसी चिन्ता में लगे रहते हैं कि कब इसके हाथ पीले हों। बाल्यावस्था व किशोरावस्था का समय बच्चों में श्रेष्ठ

संस्कारों के बीजारोपण का है। उन्हें जीवन निर्वाह के योग्य बनाने और परिवार व समाज की ज़िम्मेवारियों के प्रति जागरूक करने का है। ऐसे महत्वपूर्ण समय में क्यों आवश्यकता पड़ती है उन पर उस ज़िम्मेवारी का भार डालने की जिसके वे योग्य ही नहीं हैं?

निर्दयता और निर्ममता

आज भारत की ग्रामीण जनता में से अधिकांश बुजुर्ग महिलाएँ ऐसी हैं जो 14 वर्ष से पहले ससुराल में आईं, 15 वर्ष में बच्चे हो गए। ऐसी बाल आयु में यूँ कुचल दी गईं ये कन्याएँ (बालवधुएँ) अपने बच्चों को संस्कार देने के लिए कहाँ से लाएँ, जो उन्हें ही नहीं मिले। समाज में बढ़ती अपराधवृत्ति, व्यसन, अकर्मण्यता आदि का एक बड़ा कारण संस्कारहीन माताएँ और परिणामरूप संस्कारहीन सन्तान भी है। इसलिए 'ज़माना खराब है आजकल के नौजवान लड़के-लड़कियाँ क्या-क्या करते रहते हैं, क्या पता कल हमारे बच्चे ....।'' इस तरह की अनहोनी की आशंका से अकर्त्तव्य न करें। यूँ तो आये दिन अखबारों में दुर्घटनाओं की खबरें आती हैं तो क्या हम बाहर निकलना बंद कर देते हैं। गिरावट तो समाज के हर वर्ग में आई है, इसका निशाना बच्चों को क्यों बनाया जाये, सज़ा बच्चों को क्यों दी जाये? बच्चे को जन्म देना, पालना करना, पढ़ाना-लिखाना, स्वावलंबी बनाना, अच्छे संस्कार देना, फिर शादी करना, बाल विवाह के कारण इनमें से तीन कड़ियाँ लुप्त रह जाती हैं। यह कार्य न करने वाले बच्चे के जीवन का निर्माता बनने की बजाय निर्दयता करते हैं, ममता करने की बजाय निर्ममता करते हैं।

चरित्र और नैतिकता सच्चे साथी

वास्तव में विवाह से अधिक महत्वपूर्ण है बच्चों को वाह-वाह बनाना। लम्बी जिन्दगी जीने के लिए सच पूछो तो वे योग्यताएँ और हुनर ही हमारे सच्चे साथी हैं जिनके सहारे हम इज्जत और शान्ति से जीवन जी सकें। इसके अलावा चरित्र और नैतिकता का साथ भी किसी जीवनसाथी से कई गुणा ज़्यादा जरूरी है, नहीं तो स्वभाव न मिलने के अभाव में साथ निभाना मुश्किल हो जाता है। बचपन बिगाड़ें नहीं, संवारें, बच्चों में कलायें हैं, विशेषतायें हैं, वे कुछ बनना चाहते हैं, करना चाहते हैं। उन्हें प्रोत्साहन दे आगे बढ़ायें। उनके उमंग-उत्साह की उन्मुक्त धारा में विवाह का विघ्न ना डालें। हमारे गलत निर्णय से कल वे खुद तो दुख उठायेंगे और रोयेंगे, उनका सहभागी हमें भी बनना पड़ेगा।

सपने पूरे होने में सहयोग दें

बच्चे को पास बिठाकर सिखायें, समझायें, प्यार भरा संरक्षण दें, उसकी कोमल भावनाओं को समझें, उसके सपनों को पूरा करने में सहयोग दें, कठिनाइयों में सहारा बनें तो कभी भी आपको बच्चों के द्वारा अप्रिय स्थिति का सामना नहीं करना पड़ेगा। अगर बच्चा भटक भी रहा हो तो भी आपका स्नेह और दुआओं भरा हाथ-साथ बच्चे के जीवन में चमत्कारिक परिवर्तन कर सकता है।

ईश्वर से जोड़ें

बच्चे को अध्यात्म और ईश्वर से जोड़ें। आध्यात्मिकता उसके नैतिक स्तर को ऊँचा रखेगी, मूल्यों के प्रति उसकी आस्था को दृढ़ करेगी, उसके जीवन को मूल्यवान बनायेगी और परिवार के मूल्य को समझायेगी। ईश्वरीय सानिध्य उसमें बाधाओं को पार करने का संबल और शक्ति भरेगा, आंतरिक शांति और सहनशीलता में वृद्धि करेगा, सद्पथ पर चलने के लिए उसका मार्ग प्रशस्त करेगा। आइये, हम अपने जीवन के और दुनिया में देखे गये अनुभवों से सीख लेते हुए बालक-बालिकाओं को इस संसार-संग्राम में विजयी बनने के लिए तैयार करें, उन्हें समय देकर अपने संचित अनुभव बताकर समझदार बनायें। विवाह की बजाय वाह-वाह बनाएँ। अगर हम बच्चों के बचपन को बचा सके तो उनकी युवावस्था और जीवन को भी बचा सकेंगे....।

ये बचपन के पंख कोमल,
भरना चाहते हैं सपनों की उड़ान।
तुम डालकर सोने की बेड़ियाँ,
मत छीनो इनका आसमान।

संकल्पों की उम्र बढ़ाएँ

● ब्रह्माकुमार भारत भूषण, पानीपत

किसी भी श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम मन में संकल्प करते हैं। शुरू में इन संकल्पों का स्वरूप दृढ़ होता है। मन में उमंग-उत्साह भी होता है, आत्म विश्वास भी होता है लेकिन धीरे-धीरे संकल्पों की दृढ़ता में कमी हो जाती है, फिर ढीलापन आ जाता है। कुछ समय का अंतर पड़ने पर तो हम उन संकल्पों को बिल्कुल भूल ही जाते हैं, जैसे कि वो संकल्प मर जाते हैं। कुछ लोगों के संकल्प तो अपने ही आलस्य-अलबेलेपन के कारण मर जाते हैं तथा कुछ लोगों के संकल्प पूर्ण होने में विघ्न आते हैं। अन्य कुछेक ज्योंहि श्रेष्ठ संकल्प को पूरा करने के लिए बढ़ते हैं, उन पर ईर्ष्यालु लोगों द्वारा आरोप लगा दिए जाते हैं जिससे परेशान हो कर वे स्वयं अपने किए हुए संकल्पों की हत्या कर देते हैं।

हमें प्रयास करना चाहिए कि हम जो श्रेष्ठ संकल्प धारण करते हैं उनकी उम्र को बढ़ाएँ। कुछ भी हो जाए यदि संकल्प ले लिया तो उसे पूरा कर के दिखाएँ। उससे हम महान आत्माओं की श्रेणी में आ जाएंगे। संकल्प चाहे साधारण भी हों यदि हम उन्हें निभाते हैं तो वे महान संकल्प बन जाते हैं। संकल्पों की दीर्घायु के लिए अग्रलिखित बातें ध्यान में रखें:-

(1) दृढ़ता:- जो भी संकल्प लें उसमें दृढ़ता हो अर्थात् प्रतिज्ञा का स्वरूप हो कि करना ही है। दिन में कई बार सर्वशक्तिवान परमात्मा को साक्षी रख कर दृढ़ संकल्प करें कि मुझे करना ही है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी संस्था के निमित्त संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा ने दृढ़ संकल्प लिया कि परमपिता परमात्मा शिव की श्रीमत प्रमाण मुझे पवित्र आत्माओं की दुनिया बनानी है। प्रारम्भ में अनेक अल्पज्ञ, अन्जान आत्माओं द्वारा विरोध जताया गया। अनेकानेक विघ्न भी पड़े, अनेक परीक्षाएँ आईं लेकिन ब्रह्मा बाप का संकल्प अटल एवम् पूर्ण दृढ़ रहा। परिणाम स्वरूप आज लाखों आत्माएं पवित्र जीवन अपना कर उनके बच्चे ब्रह्माकुमारी व ब्रह्माकुमार बने।

(2) आत्म विश्वास:- जो भी संकल्प हम करें उस के लिए पूर्ण निश्चय चाहिए कि भगवान ने इसे पूरा करने की शक्ति मुझे प्रदान की है। मन में बार-बार दोहराएँ कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। मैं नहीं करूँगा तो कौन करेगा? बिजली के बल्ब के आविष्कारक थॉमस एडीसन हज़ार बार बल्ब के आविष्कार में असफल हुए लेकिन हिम्मत नहीं हारी, आखिर आविष्कार कर ही लिया। आज सारा विश्व उनका ऋणी है। यह है आत्म विश्वास, अपनी सफलता में पूर्ण विश्वास।

(3) कड़ी मेहनत:- जो भी संकल्प लें उसे पूर्ण करने के लिए एड़ी से चोटी तक का ज़ोर लगा दें। कड़ी मेहनत करें। लक्ष्य प्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दें। महात्मा गांधी जी ने संकल्प किया कि मुझे भारत को आज़ाद कराना है। इस संकल्प पूर्ति के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की, बहुत कुछ त्याग किया, अन्ततः विजय प्राप्त की।

(4) विधिवत् योजना:- संकल्पों की सिद्धि के लिए विधिपूर्वक योजना अवश्य बनाएँ। विधिपूर्वक किए गए कार्य से सिद्धि अवश्य मिलती है। किए हुए संकल्प में कैसे सफलता पानी है, उसकी पूर्ण योजना बना लें। योजना समयबद्ध हो कि इतने समय तक, इतना कार्य पूरा करना ही है। फिर अवश्य संकल्प पूरा कर पाएँगे।

(5) एकाग्रता:- लक्ष्य पर मन-बुद्धि एकाग्र रहें। बीच-बीच में लक्ष्य परिवर्तन ना हो। लक्ष्य से भटक ना जाएँ। एकाग्रता ऐसी हो जैसे एकलव्य को दिखाते हैं अथवा अर्जुन को दिखाते हैं कि मछली की आँख की पुतली को प्रतिबिम्ब में देख कर तीर छोड़ा और सफलता मिल गई।

❖

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

● ब्रह्माकुमारी तारणी, कौंदकेरा-राजिम

समय कभी अच्छा या बुरा नहीं होता, हमारा दृष्टिकोण उसे अच्छा या बुरा बना देता है। कहा गया है, कोई देखता है कीचड़ में कमल और किसी को चांद में भी दाग नज़र आता है।

गुणग्राही देखेगा अच्छाई

हमारे दृष्टिकोण एवं विचारधारा पर निर्भर करता है कि हम किसी भी घटना या परिस्थिति को किस नज़र से देखते हैं। बुराइयों को देखना अर्थात् कीचड़ को देखना और अच्छाइयों को देखना अर्थात् कमल को देखना। बुराइयों को देखेंगे तो घृणा आयेगी और अच्छाइयों को देखेंगे तो मन खुशियों से भर जायेगा। गुणग्राही, बुराई में भी अच्छाई देखेगा और अवगुणग्राही, अच्छाई में भी बुराई खोजेगा। इसलिए कहा गया है, जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि। जो जैसा होता है दूसरों को वैसा ही समझता है।

एक तालाब के एक किनारे पर प्रात: चार बजे एक साधु तथा दूसरे किनारे पर एक चोर स्नान करता था। साधु नहा-धोकर पूजा-पाठ-ध्यान आदि करता था और चोर रात भर चोरी करके सुबह स्नान कर आराम करता था। साधु सोचता था, सामने वाला व्यक्ति मेरी ही तरह कोई भक्त होगा। चोर सोचता था, दाढ़ी-मूंछ वाला यह व्यक्ति ज़रूर मेरी तरह ही चोर होगा, रात भर चोरी कर प्रात: नहा-धोकर आराम करता होगा। साधु और चोर की तरह जीवन देखने का नज़रिया सभी का अलग-अलग होता है। जिसकी जैसी दृष्टि होती है, ज़िंदगी उसे वैसी ही नज़र आती है या तो खुशनुमा ज़िंदगी या फिर दुख और अशांति से भरी ज़िंदगी, कैसे? आइये देखें –

जीवन है उपहार प्रभु का

पेड़ पर बैठी मतवाली बुलबुल कह रही थी, ज़िंदगी एक मधुर गान है। एक कीड़ा, जो बड़ी मुश्किल से अपना मुँह मिट्टी से निकाल पाया था, बोला, ज़िंदगी कड़ी मेहनत का नाम है। खिलती कली बोली, ज़िंदगी मुसकराने का नाम है। उस वक्त बारिश हो रही थी, तब एक सज्जन बोले, ज़िंदगी गम का दरिया है। हवा में उड़ते पंछी ने कहा, ज़िंदगी एक आज़ादी है। पिंजरे में कैद तोते ने कहा, ज़िंदगी एक बंधन है। एक राहगीर ने कहा, ज़िंदगी एक अनमोल यात्रा है, जिसमें कभी कांटे तो कभी फूल हैं। बहती हुई नदी की धारा ने कहा, ज़िंदगी कभी न रुकने वाली अविरल धारा है और एक राजयोगी कहता है कि जीवन प्रभु का दिया एक सुंदर उपहार है।

अच्छा देखेंगे, अच्छे बनेंगे

ये अलग-अलग परिभाषाएँ अलग-अलग विचारधाराओं पर निर्भर हैं। **अगर हमारा दृष्टिकोण कल्याणकारी होगा तो जीवन के हर पल, हर पहलू, हर घटना में कल्याण ही कल्याण नज़र आयेगा और ये तभी संभव है जब हम अपने दिल में किसी के लिए भी बुरी भावना न रखें। अपकारियों पर भी उपकार करें, बुराई में भी अच्छाई देखने की आदत डालें।** कोई कितना भी बुरा क्यों न हो, उसमें एक न एक अच्छाई ज़रूर होती है। अच्छा-अच्छा देखने से एक दिन हम अवश्य अच्छे बन जायेंगे। यह सत्य है कि एक बुराई इंसान की सभी अच्छाइयों को ढक देती है लेकिन यह भी सत्य है कि इंसान अगर चाहे तो एक अच्छाई या सद्गुण के बल से सभी बुराइयों पर विजय भी प्राप्त कर सकता है।

भक्ति मार्ग में एक कथा है, एक बार भगवान ने नारद से कहा, भूलोक

में घोषणा करवा दो, जो मेरी मनपसंद वस्तुयें लेकर मेरे पास आयेगा, उसे मुंहमांगा वरदान मिलेगा। नारद की घोषणा के पश्चात् कई व्यक्ति भगवान को रिझाने के लिए विभिन्न प्रकार के फल-फूल, मिठाई, व्यंजन, सुगंधित अगरबत्ती, हीरे-जवाहरात, सोना-चांदी इत्यादि लेकर आये परंतु भगवान संतुष्ट न हुए। नारद पुन: धरती पर आये। उनकी नज़र खेत की मेड़ पर बैठे एक किसान पर पड़ी जो कुछ सोच रहा था। नारद जी पास जाकर बोले, क्या तुमने भगवान का फरमान नहीं सुना। किसान ने कहा, सुना है देवर्षि परंतु सोच रहा हूँ कि भगवान के रचे इस संसार में किसे अच्छा कहूँ और किसे बुरा कहूँ? किसको ले जाऊँ और किसको छोड़ूँ? मुझे तो सब तरफ अच्छी ही चीज़ें दिख रही हैं। नारद किसान का सकारात्मक दृष्टिकोण देख बहुत प्रसन्न हुए और भगवान के पास ले गये। भगवान ने उसे मुंहमांगा वरदान दिया।

हमारी नकारात्मक सोच ही सबसे बड़ी बुराई है जो हमारी दृष्टि के साथ-साथ संपूर्ण सृष्टि को भी नकारात्मक बना देती है। कहा भी जाता है, सावन के अंधे को हर तरफ हरियाली ही दिखाई देती है। **प्यारे बाबा कहते हैं, बच्चे, तुम्हें सृष्टि बदलनी है लेकिन सृष्टि तब बदलेगी जब दृष्टि बदलेगी और दृष्टि बदलने के लिए वृत्ति (सोच) को बदलना बेहद ज़रूरी है क्योंकि वृत्ति से दृष्टि और दृष्टि से सृष्टि बनती है।** ❖

बीती को भूलना एक मंत्र

ब्रह्माकुमारी राजरानी, इलाहाबाद

हम अपना कार्य उचित रीति से तभी पूर्ण कर सकेंगे जब पिछली भूलों, कमियों, गलतफहमियों, कमजोरियों को मन से निकाल देंगे। भूलने से प्रतिकूलता की भावनायें व अप्रिय प्रसंग के कड़वे अनुभव, व्यर्थ की हाय-हाय मिट जाती है। ढीले संकल्प इच्छा शक्ति की वृद्धि न कर सकेंगे। शंकित व दुविधा वाली मानसिक स्थिति में रहने से हम गलती कर बैठते हैं। यदि कोई अप्रिय घटना हो गई, उसका पश्चाताप हो गया, तो ठीक है किन्तु उसी पर झुंझलाते हुए जीवन क्लेश एवं भारयुक्त न बनायें। बार-बार उन्हीं घटनाओं पर विचार कर तिल का ताड़ न बनायें। ऐसा करने से हम अपना सुनहरा भविष्य अंधकारमय बना लेंगे क्योंकि जैसा अपने बारे में सोचेंगे वैसे ही बन जाएँगे।

जो हर समय बीते हुए दु:ख व नकारात्मक विचारों का शिकार रहता है वह निरन्तर पछतावे और वैर-विरोध की आग में जलता है, आत्मग्लानि अनुभव करता है। उसके हृदय में हमेशा बेचैनी का तूफान मचा रहता है इस कारण आध्यात्मिकता के उच्च शिखर पर नहीं चढ़ सकता। जब व्यक्ति भूल करके पुन: सम्भल जाता है, भूल पर पूर्णविराम लगा देता है, बार-बार भूल नहीं दोहराता, उधर से चित्त हटा भविष्य की आशा बाँधता है, उसका प्रत्येक कार्य एक नई ज्योति से प्रकाशित रहता है।

दु:ख, क्लेश, तिरस्कार, निन्दा आदि से मुक्त होने के लिए भुला देना ही 'उत्तम दवा' है। मन को मोड़ कर शुद्ध, उत्तम अभिलाषाओं पर केन्द्रित कर लें। जिन विचारों से जीवन सुखी बने उन्हीं का चिन्तन कर चित्त को एकाग्र करें। विषयों से, इन्द्रियों के भोगों से, सांसारिक ताने-बाने से आज़ाद होकर आत्मचिन्तन की गहराई में प्रवेश करें। जीवन को नष्ट करने वाली शंका और भय से बचें।

जिसने अप्रिय घटनाओं पर बिन्दी लगाने के महत्त्व को मन में स्थिर कर लिया वह सुखी है। उसके लिए दु:ख, क्लेश का बोझ उतारना सरल-सी बात है। **यदि हमें शक्ति की इच्छा है तो कमजोरी के विचारों को भूल जाएँ। प्रेम की प्राप्ति के लिए ईर्ष्या, क्रोध, निन्दा, बकवास, दूसरों की कमियाँ ढूँढना, भ्रम, संशय को भूला दें। सुन्दर विचारों को हृदय के कोन–कोने में भर लें। पापों, दु:खों, चिन्ताओं से मुक्ति पाना चाहते हैं तो अप्रिय बीती बातों पर बिन्दी लगा दें।** ❖

ज्ञान चन्द्रमा की उज्ज्वल किरण – दादी निर्मलशान्ता जी

● ब्रह्माकुमारी बिन्दु, रायबगान (कोलकाता)

लगता है सोलह कलाओं से संपन्न चंद्रमा कहीं छिप गया, हाँ, समय के चक्र ने उन्हें अपनी गोद में छिपा ही तो लिया लेकिन यह सत्य है कि यह फूल फिर से गुलशन बनकर अनेक ज़िन्दगियाँ महकायेगा। सन् 1964 में शिव-सागर से निकली यह बूँद जब बादल बनकर कोलकाता की धरती पर बरसी तो हरा-भरा हो गया ईस्टर्न जोन का आँचल।

प्राणप्रिय दीदी निर्मलशान्ता जी की पालना में बिताये सुनहरे पल आज मुझे विशेष याद आ रहे हैं। दिनांक 16 मार्च, 2013 को रात्रि दो बजे कोलकाता से प्यारे मधुबन के प्रांगण में जब पहुँची तो लगा कि हिस्ट्री हॉल वही है, आपकी चंदन-सी शीतल काया भी है परंतु सीप से वो मोती सागर में समा चुका है। एक तरफ विदाई की महसूसता हो रही थी और दूसरी तरफ धरती से आकाश के मिलन की अनुभूति भी हो रही थी।

प्राणप्रिय परदादी जी की स्नेह-छाया में समस्त विश्व के लाखों अलौकिक बच्चे वात्सल्य भरी अलौकिक पालना पा रहे थे। आप में हमने माँ, दादी और परदादी का प्यार पाया।

आपका चित्त निश्छल और पवित्र था। आपका चेहरा ममता की अलौकिक मूर्त था। आपके बोल में जैसे मोती टपकते थे। आपकी दृष्टि निहाल करने वाली थी। आपका चुम्बकीय स्पर्श उमंग-उत्साह से हीन में जैसे नये प्राण डाल देता था। आपने भले ही इतनी उम्र पाई परन्तु आपमें सदा एक निर्दोष छोटा-सा बच्चा सबको दिखाई देता था।

आप कहीं एक जगह नहीं थी अपितु सबके जीवन में, दिलों में धड़कन की तरह बसती थीं। ओ परदादी! क्या मैं आपसे फिर मिल सकूँगी? जरूर-जरूर। दिल कहता है – तुम तो यहीं-कहीं हो परदादी! बस देखने के लिए वो नज़र चाहिए। सूरज कभी ढलता नहीं, चाँद कभी छिपता नहीं, सागर कभी सूखता नहीं, हवा कभी ठहरती नहीं, आप भी हम सर्व के दिलों में हैं और रहेंगी। मैं अपनी छोटी बहन रुक्मिणी को बहुत-बहुत दिल से मुबारक देती हूँ कि आपने परदादी की बहुत-बहुत प्यार से पालना की।

वैसे तो आग एक प्रकार से ज्वाला है परन्तु जब चन्दन-सी ठण्डी काया को उस अग्नि ने अपने आगोश में लिया तो वह ठण्डी तो नहीं हुई पर शीतल ज़रूर हो गई और खुशी से खूब दहक उठी, महक उठी और कहने लगी – यही है कुदरत का

नियम। यह तो सबके साथ होना है, मैंने तो अपनी ही चीज़ ली है जिसको पंच तत्वों में विलीन कर दूँगी परन्तु आत्मा अमर है, अविनाशी है। इस सत्य को हमें स्वीकारना ही होगा और हम सर्व ने उसे नम आँखों से स्वीकारा।

अन्त में मेरे दिल में यही आवाज़ आती है – आप हम सर्व की प्रेरणा थीं और रहेंगी। मेरी यादों में आप सदा हैं, सदा बसती रहेंगी। आज मैं जो हूँ, जहाँ हूँ, आपकी ही देन है। आपने मुझे अँगुली पकड़ कर चलाया, आज भी आप मेरा सहारा हैं। भीगी पलकें लिये आपको शत्-शत् प्रणाम करती हूँ और अपने आपसे यही प्रतिज्ञा करती हूँ कि जीवन के आखिरी पल तक आपकी चलाई हुई राह पर चलती रहूँगी तथा अनेक आत्माओं का कल्याण करती रहूँगी। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1.नवापारा-राजिम- राजगुरु महामण्डलेश्वर विशोकानंद भारती से ज्ञान-चर्चा करते हुए ब्र.कु. नारायण भाई। 2.रीवा- म.प्र. के कैबिनेट मंत्री भ्राता राजेन्द्र शुक्ल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. निर्मला बहन। 3.रेंढाखोल- उड़ीसा के वित्त मंत्री भ्राता प्रसन्न आचार्य को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. जयन्ती बहन। 4.रतलाम- म.प्र. के नगरीय प्रशासन तथा विकास राज्यमंत्री भ्राता मनोहर ऊँटवाल को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ब्र.कु. सविता बहन उनके साथ। 5.जांजगीर- केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री भ्राता चरणदास महंत तथा छ.ग. विधानसभा उपाध्यक्ष भ्राता नारायण प्रसाद चन्देल को ईश्वरीय सौगात देने के बाद ब्र.कु. ललिता बहन तथा अन्य समूह चित्र में। 6.सेंधवा- म.प्र. के नगरीय प्रशासन तथा विकास राज्यमंत्री भ्राता मनोहर ऊँटवाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. छाया बहन। 7.कटक- 'विज्ञान और आध्यात्मिकता' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सुलोचना बहन, अभिनेत्री वैशाली बहन, नगरपालिका आयुक्त भ्राता निहार रंजन महापात्र, ब्र.कु. कमलेश बहन, ब्र.कु. अम्बिका बहन तथा अन्य। 8.मुम्बई (बोरिवली)- बारह ज्योतिर्लिंगम दर्शन झांकी का उद्घाटन करते हुए सांसद भ्राता संजय निरूपम, पार्षद भ्राता शिव शेटी, ब्र.कु. बिन्दु बहन तथा अन्य।

Regd. No. RAJHIN10563/65, Postal Regd. No. RJ/SRO/9559/2012-2014
Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 1-6 of the month.

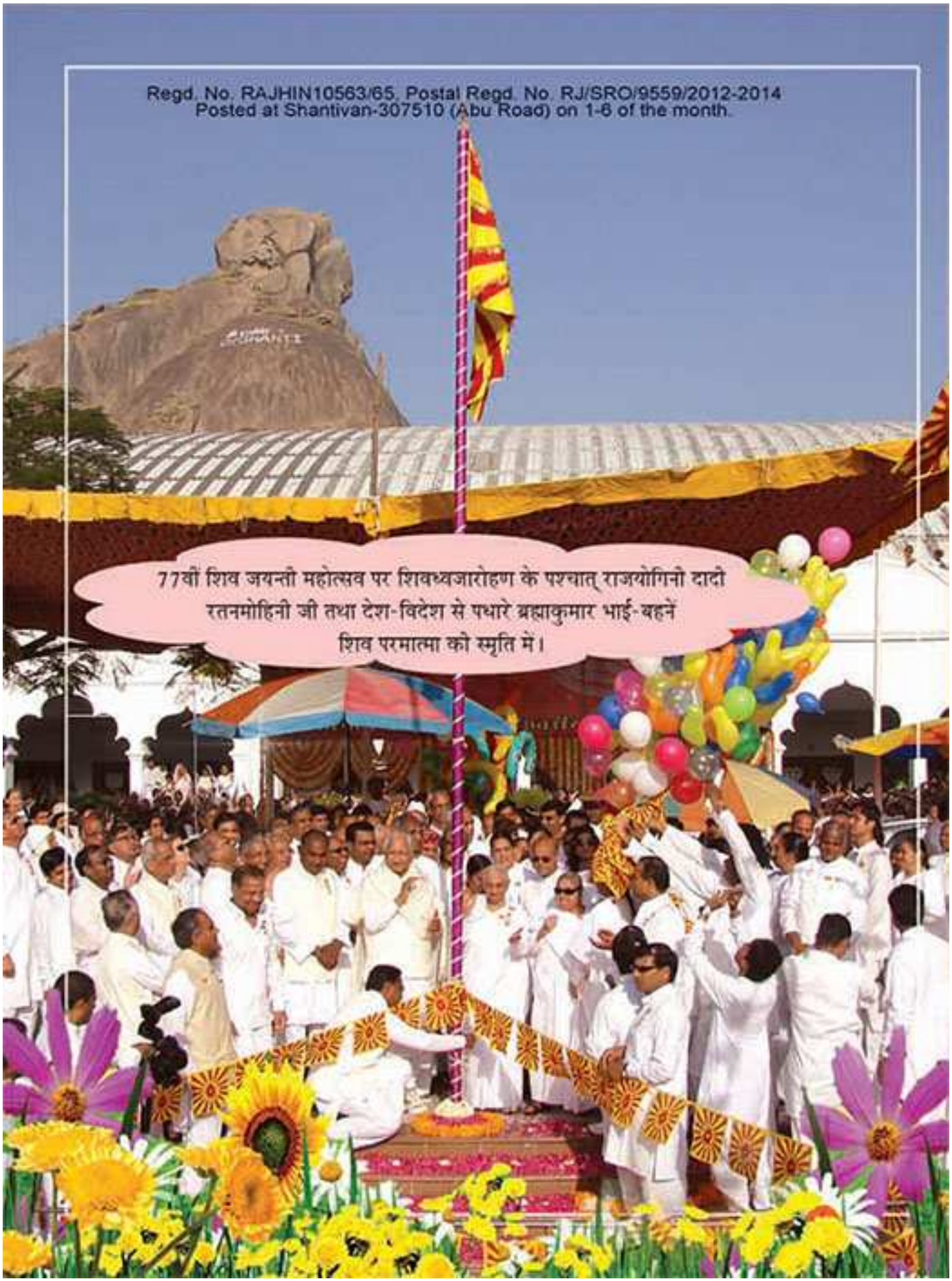

77वीं शिव जयन्ती महोत्सव पर शिवध्वजारोहण के पश्चात् राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी तथा देश-विदेश से पधारे ब्रह्माकुमार भाई-बहनें शिव परमात्मा को स्मृति में।